RNI NO. RAJHIN/2013/57419

राजस्थान का सर्वाधिक ई-पेपर दैनिक

द पुलिस पोस्ट

आंदोलन नही अखबार

जयपुर
सोमवार
21/अक्टूबर/2024

जयपुर, जैसलमेर, भीलवाड़ा से प्रसारित

वर्ष: 10: अंक: 183

दूरभाष: 01482: 433184: पृष्ठ: 08: मूल्य: 1.50 रुपए

न्यूज़ इनबॉक्स

गाजा पट्टी में इजरायल ने मचाई तबाही, हमलों में 87 लोगों की मौत

गाजा पट्टी।

उत्तरी गाजा पट्टी पर इजरायल कहर बरपा रहा है। शनिवार की रात और रविवार को इजरायल ने कई घरों पर हमला किया। इन हमलों में करीब 87 लोगों की जान गई है। वहीं कई लोग अभी लापता हैं। बेत लाहिया शहर में इजरायली हमलों में 40 लोगों के घायल होने की खबर है। शनिवार देर रात से उत्तरी गाजा में इंटरनेट सेवा भी ठप है। रविवार दोपहर तक यह बहाल नहीं हो पाई है। चिकित्सक रहीम खेदर के मुताबिक इजरायली हमले में दो दंपती और उनके चार बच्चे की जान गई है। मृतकों में एक महिला, बेटा-बहू और उनके चार बच्चे भी शामिल हैं। हमले में एक बहुमंजिला इमारत और उसके आसपास स्थित चार घर ध्वस्त हो चुके हैं।

वाराणसी में आई अस्पताल का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया उद्घाटन

तेवर टाइम्स

वाराणसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को वाराणसी में आरजे शंकरा सुपर स्पेशलिटी आई हास्पिटल का उद्घाटन किया। इस दौरान पीएम मोदी ने जनता को संबोधित करते हुए कहा कि पावन महीने में काशी आना अपने आप में पुण्य की अनुभूति का अवसर होता है। आज यहां अपने काशीवासी हैं ही, संत जनों और परोपकारियों का भी सुखद संयोग है। प्रधानमंत्री ने कहा कि शंकराचार्य जी के साथ दर्शन, प्रसाद और आशीर्वाद का सौभाग्य मिला है। उनके आशीर्वाद से काशी और पूर्वांचल को एक और आधुनिक अस्पताल मिला है। आरजे शंकरा नेत्र अस्पताल जन-

बाबा बालकनाथ का युवती के साथ अश्लील वीडियो वायरल, रेप का मुदकमा दर्ज

लक्ष्मणगढ़।

सीकर में लक्ष्मणगढ़ के खेड़ी दातुंजला के क्षेत्रपाल मंदिर के बाबा बालकनाथ के खिलाफ दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज हुआ। सीकर उद्योग नगर थाने में बाबा बालकनाथ, उसके ड्राइवर समेत 3 आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज हुआ है। पीड़िता ने नशीला पदार्थ खिलाकर दुष्कर्म करने का आरोप लगाया। पीड़िता का आरोप है कि बाबा ने जान से मारने की धमकी भी दी। यह मामला करीब 6 महीने पहले का है, जिसका वीडियो वायरल होने के बाद पीड़िता ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दी है। लक्ष्मणगढ़ के खेड़ी दातुंजला के क्षेत्रपाल मंदिर के पुजारी बाबा बालकनाथ के खिलाफ यह केस दर्ज किया है। पीड़िता का कहना है कि बाबा ने तंत्र विद्या की आड़ में नशीला पदार्थ खिलाकर दुष्कर्म

विदेश दौरे से लौटे सीएम व डिप्टी सीएम का शानदार स्वागत

जनता के बीच काम करने वालों को दिया है टिकट: भजनलाल

जयपुर।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा विदेश दौरे से लौट आए है। इस दौरान उनका व उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी का एयरपोर्ट व भाजपा मुख्यालय पर अभूतपूर्व स्वागत किया गया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने प्रदेश की 7 सीटों पर होने वाले उपचुनाव में टिकट बंटवारे को लेकर कहा कि उन्हें टिकट दिया गया है, जिन्होंने जनता के बीच में रहकर काम किया। दरअसल, सीएम रविवार को राइजिंग राजस्थान समिट के लिए जर्मन-यूके की यात्रा पूरी कर जयपुर पहुंचे थे। दोपहर करीब 3 बजे जयपुर एयरपोर्ट पहुंचने पर पार्टी पदाधिकारियों की ओर से उनका स्वागत किया गया। इसके बाद शाम 4 बजे वे पार्टी मुख्यालय पहुंचे। भाजपा मुख्यालय में भी स्वागत और सभा का कार्यक्र म रखा गया था। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने भी गहलोत सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि यहां पहले होटल में कैंप करने वाली सरकार थी,इसलिए यहां निवेशक अपना पैसा इन्वेस्ट नहीं करना चाहते थे।

काम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी

उपचुनाव को लेकर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि हमने सभी से तय करके टिकट की घोषणा की है। मैं आप सभी से आग्रह करना चाहता हूं कि जिन प्रत्याशियों को हमने टिकट दिया है यह वे हैं, जिन्होंने जनता के बीच रहकर काम किया। इन सभी सीटों पर दूसरी पार्टी के विधायक थे। हमने यहां भी काम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। क्योंकि हम राजस्थान की 8

करोड़ जनता के लिए काम करते हैं।

सीएम एयरपोर्ट से प्रदेश भाजपा मुख्यालय पहुंचे। यहां प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ की ओर से भी स्वागत किया गया। सीएम भजनलाल शर्मा ने कहा कि ईआरसीपी की डीपीआर बन चुकी है। कुछ दिनों में इसका शिलान्यास और एमओयू भी होने वाला है। सरकार में आते ही शेखावाटी के लोगों के लिए यमुना जल समझौता किया। कांग्रेस के लोग कहते हैं कि हमने कई बार केंद्र सरकार को पत्र लिखे। मैंने कहा कि आप एक पत्र तो दिखा दो लेकिन आज तक भी एक पत्र नहीं दिखाया।

इनका सच अभी कुछ दिन पहले ही सामने आया, जब इन्होंने हरियाणा में अपने घोषणा पत्र में लिखा कि इनकी सरकार बनेगी तो राजस्थान के साथ हुआ यमुना जल समझौता कैंसिल करेंगे। मुख्यमंत्री भजनलाल ने कहा कि मैं चुनाव में हरियाणा गया था। मैंने कहा कि यह केवल तुम्हारा सपना है। जब सरकार बनाओगे तभी तो समझौता रद्द करेंगे, जब तुम आओगे नहीं तो क्या रद्द करेंगे। इससे इनका सच सामने आ गया कि यह लोग शेखावाटी के लोगों को कभी यमुना का पानी पीते हुए देखना नहीं चाहते हैं।

4 साल में प्रस्ताव धरातल पर उतार देंगे

सीएम भजनलाल शर्मा ने कहा कि हम पहले साल में राइजिंग राजस्थान समिट का आयोजन करवाने जा रहे हैं। मुझे लोगों ने कहा भी कि यह सरकार का पहला साल है। इसमें इतना बड़ा आयोजन आप करवा रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि अगर हम पहले साल में आयोजन करवाएंगे। तभी जो निवेश प्रस्ताव आएंगे उन्हें 4 सालों में धरातल पर उतार पाएंगे। उन्होंने कहा कि हम निवेश लाने के लिए जर्मनी-यूके गए थे। जर्मनी हमारे यहां भाषायी कॉलेज खोलना चाहता हैं। इसी तरह से राजस्थान के कई सेक्टर में जर्मनी और यूके के निवेशकों ने निवेश करने पर सहमति जताई हैं। अंत में सीएम भजनलाल शर्मा ने धौलपुर की घटना पर संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि ओवरलोडिंग के चलते कई दुर्घटनाएं हो रही है। सरकार अब ट्रांसपोर्ट के क्षेत्र में भी बेहतर काम करेगी।

इस दौरान मदन राठौड़ ने कहा कि पहले भी राजस्थान में इन्वेस्टमेंट के लिए समिट आयोजित होती आई है। लेकिन, आज से पहले निवेशकों ने कभी राजस्थान में रुचि नहीं दिखाई। क्योंकि निवेशकों को पता था कि राजस्थान में एक दूसरे की टांग खींचे करने वाली, होटल में कैंप करने वाली सरकार हैं। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ ने संबोधित करते हुए गहलोत सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि यहां कोई सरकार गिराने वाला था तो कोई 5 साल सरकार बचाने में लगा रहा। ऐसे में ऐसे में कोई भी निवेशक अपनी गा?ी कमाई राजस्थान में नहीं लगाना चाहता था। लेकिन निवेशकों को विश्वास है कि राजस्थान में डबल इंजन की सरकार है। इसलिए आज हर निवेशक राजस्थान में निवेश करना चाहता हैं। मदन राठौड़ ने कहा कि करवा चौथ का पर्व है। सीएम भजनलाल लाल शर्मा ने कहा था कि आप कार्यक्र म मत रखो, लोग नाराज होंगे। हमारे कार्यकर्ताओं में उत्साह था उन्होंने कार्यक्र म का आयोजन किया। मैं अपने कार्यकर्ताओं को कहना चाहता हूं कि आप घर पर जाएं तो आप घर पर समझाना कि आप ऐसे व्यक्ति का स्वागत करने गए थे। जो आपके बच्चों को प्रदेश के युवाओं को रोजगार देने का काम कर रहा है। अगर आप ऐसा करोगे उन्हें विश्वास दिलाओगे तो आपको आज घर पर डांट नहीं प?गी।

जर्मनी और लंदन की यात्रा से लौटे

दरअसल, सीएम भजनलाल शर्मा 14 अक्टूबर को जर्मनी पहुंचे थे। वहां तीन दिन की यात्रा के बाद सीएम 17 अक्टूबर को लंदन पहुंचे थे। जर्मनी में सीएम भजनलाल शर्मा ने प्रमुख उद्योगपतियों को राजस्थान में निवेश करने का न्यौता दिया। यहां सीएम ने म्यूनिख में फ्लेक्स बस कंपनी के प्लांट का भी विजिट किया।

सीएम भजन लाल शर्मा के स्वागत कार्यक्र म में खींवसर प्रत्याशी रेवतराम डांगा, रामग? प्रत्याशी सुखवंत सिंह और दौसा प्रत्याशी जगमोहन मीणा भी पहुंचे। रेवंतराम डांगा और नागौर के प्रभारी मंत्री कन्हैयालाल चौधरी आम कार्यकर्ताओ के बीच बैठे नजर आए।

गौरतलब है कि लंदन में सीएम भजनलाल शर्मा और डिप्टी सीएम दिया कुमारी ने इंवेस्टर्स और टूरिज़्म समिट को संबोधित किया। वहीं लंदन के पैलेस ऑफ वेस्टमिंस्टर में स्थित ब्रिटेन की संसद का दौरा भी किया। इस दौरान उन्होंने भारतीय मूल के चुनिंदा सांसदों के साथ बैठक की।

धौलपुर: घायलों की नाजुक हालत होने पर जिला चिकित्सालय धौलपुर के लिए रेफर किया

बस ने टेंपो को मारी टक्कर, दर्दनाक हादसे में 9 बच्चों सहित 12 लोगों की मौत

धौलपुर।

जिले के बाड़ी सदर थाना इलाके में एनएच 11बी पर सुनीपुर गांव के नजदीक रात करीब 11 बजे स्लीपर कोच बस ने टेंपो को टक्कर मार दी। इस दर्दनाक हादसे में नौ बच्चे सहित बारह लोगों की मौत हो गई। घटना से मौके पर चीख पुकार मच गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी डेड बॉडी को कब्जे में लेकर बाड़ी राजकीय सामान्य चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवा दिया है। घायलों की नाजुक हालत होने पर जिला चिकित्सालय धौलपुर के लिए रेफर किया गया है। सड़क हादसे में 12 जनों की मौत के बाद जिला कलेक्टर श्रीनिधि बीटी एवं पुलिस अधीक्षक सुमित मेहरड़ा बाड़ी राजकीय सामान्य चिकित्सालय पहुंच कर स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने मृतक के परिजनों से मुलाकात कर ढांढस बंधाया। धौलपुर जिला कलेक्टर श्रीनिधि बीटी ने बताया कि- हादसा बेहद दर्दनाक हुआ है। इस हादसे में नहनू एवं बंटी उर्फ इरफान के लगभग पूरे परिवार खत्म हो चुके हैं। नहनू की पत्नी जरीना सहित दो बच्ची एवं एक पुत्र की हादसे में मौत हुई है। वहीं इरफान उर्फ बंटी का पूरा परिवार खत्म हो गया है। कलेक्टर ने बताया कि आयुष्मान योजना के तहत मृतक के आश्रितों को 10-10 लाख की आर्थिक मदद सरकार की तरफ से दिलाई जाएगी।

मृतकों में 9 बच्चे,2 महिलाएं और एक पुरुष शामिल

दर्दनाक हादसे में 12 की मौत

जानकारी के मुताबिक बाड़ी शहर की करीम कॉलोनी गुमट मोहल्ला निवासी नहनू पुत्र गफूर खान सरमथुरा थाना क्षेत्र के गांव बरौली में अपने परिवार के सदस्यों को साथ लेकर रिश्तेदारी में भात कार्यक्रम में शामिल होने गया था। शनिवार देर रात को भात कार्यक्रम में शामिल होकर परिवार के सभी सदस्य टेंपो में सवार होकर वापस घर लौट रहे थे, लेकिन बाड़ी की तरफ से तेज रफ्तार में जा रही स्लीपर कोच बस ने सुनीपुर गांव के नजदीक सामने से टक्कर मार दी। इस दर्दनाक सड़क हादसे में 12 लोगों की मौत हो गई। घटना के बाद मौके पर हाहाकार मच गया। दुर्घटना को देख हाईवे से गुजर रहे अन्य वाहन चालक मौके पर रुक गए, जिन्होंने घटना की सूचना पुलिस को दी।

पीएम ने जताया दुख

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजस्थान के धौलपुर हुए हादसे पर गहरा दुख जताया है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि धौलपुर में हुआ हादसा हृदयविदारक है। इसमें मासूम बच्चों सहित जान गंवाने वालों के शोकाकुल परिजनों के प्रति मेरी संवेदनाएं। ईश्वर उन्हें इस पीड़ा को सहने की शक्ति प्रदान करे। इसके साथ ही मैं सभी घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। राज्य सरकार की निगरानी में स्थानीय प्रशासन पीड़ितों की हरसंभव सहायता में जुटा है।

शहर में पसरा सन्नाटा

सड़क हादसे में 12 जनों की मौत हो जाने के बाद बाड़ी शहर में सन्नाटा पसर गया है। मोर्चरी पर मृतकों के परिजन रिश्तेदार एवं शहर के लोगों की भारी भीड़ जमा हो गई। परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल बना हुआ है। मुस्लिम समाज के अध्यक्ष बाबुल खान ने मृतक के आश्रितों के लिए आर्थिक मदद की मांग कीहै। समाज के लोग सरकारी

राज्यपाल ने भी जताई संवेदन

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने भी धौलपुर में हुए भीषण सड़क हादसे पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने ईश्वर से मृतकों की पुण्यात्मा की शांति और शोक संतप्त परिजनों को यह दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की कामना की है। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने भी धौलपुर में हुए सड़क दुर्घटना पर गहरा दुख जताया है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि हादसे में 12 लोगों की मृत्यु बेहद

जयपुर विकास प्राधिकरण (जेडीए) की बड़ी कार्रवाई

आरएसएस कार्यकर्ताओं पर हमला करने वाले आरोपी के घर चला बुलडोजर

जयपुर।

जयपुर विकास प्राधिकरण (जेडीए) ने बड़ी कार्रवाई करते हुए जयपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के 10 कार्यकर्ताओं को चाकू घोंपने वाले आरोपियों के घर पर बुलडोजर चलाया और उनके अवैध निर्माण को ध्वस्त किया गया। रिपोर्ट्स की मानें, तो मंदिर में जागरण के दौरान आरएसएस कार्यकर्ताओं पर बाप और बेटे ने हमला कर दिया था।

इस पूरे मामले पर एसीपी गौरीशंकर शर्मा ने बताया कि गुरुवार को हुई वारदात के दूसरे दिन शुक्रवार को मौका परीक्षण किया गया था। इसके बाद मकान मालिक नसीब चौधरी को जेडीए

ने शनिवार को नोटिस जारी किया था और उनसे 24 घंटों के भीतर जवाब देने के लिए कहा गया था। जब जवाब नहीं मिला तो रविवार को सुबह 10 बजकर 40 मिनट पर जेडीए की ओर से कार्रवाई की गई। रिपोर्ट्स की मानें, तो नसीब चौधरी ने मंदिर की जमीन और पार्क की जमीन पर अवैध कब्जा करने के दो कमरों का एक ढांचा बना रखा था। उन कमरों में जिम का सामान और बड़े ड्रम रखे थे। इस कार्रवाई पर एसपी ने कहा कि कार्रवाई के जरिए मंदिर और पार्क की जमीन को अतिक्र मण मुक्त कराया गया है। पड़ोसी ने यहां पर कब्जा कर रखा था और जेडीए ने इसे ध्वस्त कर दिया है।

एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स ने बड़ी गैंग का किया पर्दाफाश

जयपुर/सीकर।

राजस्थान पुलिस की एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स की ओर से नीमकाथाना जिले में बड़ी कार्रवाई की गई। यहां पुलिस टीम ने जय ज्वाला माता 0333 गिरोह के सरगना इंद्र राज गुर्जर उर्फ टाइगर और उसके साथी हिस्ट्रीशीटर ईश्वर गुर्जर को गिरफ्तार कर लिया। एंटी गैंगस्टर टीम ने बदमाशों को पाटन थाना क्षेत्र में दबोच लिया। इस गैंग के सरगना इंद्राज गुर्जर पर 10000 का इनाम घोषित है। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स दिनेश एमएन ने बताया कि पुलिस मुख्यालय की एजीटीएफ टीम लगातार सक्रिय गैंगस्टर्स, हार्डकोर बदमाशों, ईनामी अपराधियों, अवैध मादक पदार्थ व हथियार तस्करों के विरूद्ध बड़ी-बड़ी कार्रवाई कर रही है। शनिवार को टीम की सूचना पर नीमकाथाना डीएसटी और पाटन थाना पुलिस ने 10 हजार के इनामी जेजेएम 0333 गैंग के सरगना और उसके साथी को गिरफ्तार किया है।

बीजेपी उम्मीदवार नव्या ने कांग्रेस पर बोला हमला

वायनाड गांधी परिवार के लिए सिर्फ एक दूसरी सीट है

वायनाड।

केरल के वायनाड लोकसभा क्षेत्र में अगले महीने उपचुनाव होने वाला है। इस क्षेत्र से भाजपा ने नव्या हरिदास को चुनावी मैदान में उतारा। नव्या का सामना कांग्रेस की उम्मीदवार प्रियंका गांधी वाड्रा से होने वाला है। चुनाव से पहले भाजपा उम्मीदवार ने कांग्रेस नेता को चुनौती दे दी। उन्होंने कहा कि आगामी उपचुनाव में प्रियंका गांधी को कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ेगा। बता दें कि 13 नवंबर को होने वाले इस उपचुनाव में एलडीएफ ने सत्यन मोकेरी को अपना उम्मीदवार बनाया है।

नव्या हरिप्रसाद देंगी प्रियंका गांधी को टक्कर

नव्या हरिदास ने उपचुनाव को लेकर मीडिया से बात की। उन्होंने कहा, "मेरी प्रतिद्वंद्वी प्रियंका गांधी हैं। मैं केवल इतना कहना चाहूंगी कि वायनाड में कांग्रेस को कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा। राहुल गांधी ने रायबरेली की सीट बरकरार रखने के लिए वायनाड की सीट छोड़ दी थी। जब वायनाड के लोगों को भूस्खलन का सामना

राहुल लोगों के मुद्दों को उठाने में भी नाकाम रहें

भाजपा उम्मीदवार ने कहा, "अगर प्रियंका गांधी वायनाड लोकसभा सीट के लिए चुनी जाती हैं तो भी मामला कुछ ऐसा ही होने वाला है। पिछले पांच वर्षों में राहुल गांधी ने शायद ही इस निर्वाचन क्षेत्र का दौरा किया हो। वे यहां के लोगों के मुद्दों को उठाने में भी नाकाम रहें। यह मेरा पहला लोकसभा चुनाव होगा।" भाजपा ने शनिवार को कोझिकोड निगम में दो बार के पार्षद को वायनाड से अपना उम्मीदवार बनाया। इस साल लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश की रायबरेली सीट से चुने जाने के बाद राहुल गांधी ने वायनाड की सीट छोड़ दी

करना पड़ा, तो उनके पास इन मुद्दों को उठाने के लिए संसद में कोई प्रतिनिधि नहीं था।"

7 विधानसभा सीटों पर होगें उपचुनाव, भाजपा ने 6 सीटों पर प्रत्याशियों के नामों का ऐलान किया

राजस्थान उपचुनाव में बीजेपी की मुश्किलें बढ़ीं, तीन सीटों पर निर्दलीय चुनाव लड़ सकते हैं बागी!

जयपुर।

प्रदेश में 7 विधानसभा सीटों पर 13 नवंबर को उपचुनाव होने हैं। भाजपा ने 6 सीटों पर प्रत्याशियों के नामों का ऐलान कर दिया है। चौरासी सीट पर अभी प्रत्याशी के नाम की घोषणा नहीं की गई है। उपचुनाव भाजपा की 10 महीनों की सरकार के काम पर मुहर लगाएंगे, इसलिए इन्हें महत्वपूर्ण माना जा रहा है। लेकिन टिकट की घोषणा होने के बाद कुछ सीटों पर बगावती सुर भी सुनने को मिले हैं।

6 सीटों पर ये हैं भाजपा के प्रत्याशी

झुंझुनूं: राजेंद्र भांबू
खींवसर: रेवतराम डांगा
दौसा: जगमोहन मीणा
सलूंबर: शांता देवी मीणा
देवली-उनियार: राजेंद्र गुर्जर
रामगढ़: सुखवंत सिंह

बागी सुर दिखा रहे नेता, 13 नवंबर को मतदान

इन सीटों पर बागी सुर तेज हुए

झुंझुनूं: इस सीट पर पार्टी ने 2023 के विधानसभा चुनाव में बागी होकर चुनाव लड़े राजेंद्र भांबू को टिकट दिया है। भांबू 2018 का विधानसभा चुनाव भी पार्टी की टिकट पर लड़ चुके हैं, लेकिन तब बबलू चौधरी ने बगावत की और भाजपा चुनाव हार गई।

सलूंबर

इस सीट पर पार्टी ने दिवंगत विधायक अमृतलाल मीणा की पत्नी शांता देवी मीणा को टिकट दिया है। इससे नाराज होकर नरेंद्र मीणा ने पार्टी कार्यकर्ताओं की मीटिंग बुलाई, इसमें वे भावुक भी हो गए। नरेंद्र मीणा ने पार्टी को 24 घंटे का अल्टीमेटम दिया है। उन्होंने कहा कि अल्टीमेटम पूरा होने के बाद आगे का फैसला करेंगे। नरेंद्र मीणा के कार्यकर्ता उन्हें निर्दलीय चुनाव लड़ाना चाह रहे हैं।

रामगढ़:

रामगढ़ सीट से भाजपा ने सुखवंत सिंह को टिकट दिया है, जो 2023 के विधानसभा चुनाव में भाजपा से बागी होकर चुनाव लड़े। तब पार्टी ने पूर्व विधायक ज्ञानदेव आहूजा के भतीजे जय आहूजा को टिकट दिया, जो तीसरे नंबर पर रहे। अब जय आहूजा ने सुखवंत सिंह को टिकट देने पर विरोध जताया है। यहां भी भाजपा के लिए मुश्किलें बढ़ गई हैं।

शुद्ध आहार मिलावट पर वार अभियान

शुद्ध आहार मिलावट पर वार अभियान के तहत दीपावली पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा मांडल उपखंड के हिसनिया क्षेत्र में 1000 से अधिक मिलावटी मावा पाया गया, जिसे नष्ट कर सैंपल खाद्य प्रयोगशाला में भिजवाए , मौके पर पाम तेल के कंटेनर पाए गए' दीपावली पर खाद्य सुरक्षा विभाग भीलवाड़ा की विशेष कार्रवाई ' जानकारी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर चेतेंद्र पुरी गोस्वामी द्वारा दी गई'

चिकित्सा विभाग की खाद्य सुरक्षा दल की ताबड़तोड़ कार्यवाही से मिलावट खोरो में भय व्याप्त'

द पुलिस पोस्ट

जिला कलेक्टर नामित मेहता एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉक्टर चेतेंद्र पुरी गोस्वामी के निदेर्शानुसार खाद्य सुरक्षा दल द्वारा हिस्निया गांव में प्रहलाद राय शर्मा हवाई के यहां कार्यवाही की गई कार्रवाई के दौरान भारी मात्रा में मावा तैयार मिला तथा मौके पर खाद्य सुरक्षा दल को पाम आयल उपलब्ध मिला खाद्य सुरक्षा दल द्वारा विक्रेता से जानकारी लेने पर उक्त मावा में पाम आयल मिलाया जाना स्वीकार किया इसके पश्चात खाद्य सुरक्षा अधिकारी मनीष कुमार शर्मा ने नमूनीकरण करते हुए उक्त समस्त खोए को जिसकी अनुमानित मंत्र लगभग 1000 किलोग्राम थी को मौके पर गवाहों की उपस्थिति व्यापारी की सहमति से जनहित को देखते हुए उक्त खोए को मौके पर नष्ट कराया गया

शिकार की तलाश में पेड़ पर चढ़ गया अजगर:

केवलादेव नेशनल पार्क में जुटी भीड़; लोगों ने कैमरे में किया कैद

द पुलिस पोस्ट

भरतपुर। भरतपुर के केवलादेव नेशनल पार्क में एक 10 फीट लंबा अजगर शिकार की तलाश में पेड़ पर चढ़ गया। जब उसे शिकार नहीं मिला तो वह शिकार की तलाश में दूसरी जगह चल दिया। अजगर को पेड़ में चढ़ा देख काफी सारे पर्यटक वहां पहुंच गए और अजगर की फोटो क्लिक करने लगे। केवलादेव नेशनल पार्क के उ्रद्ध मानस सिंह ने बताया- यह नजारा नेशनल पार्क के अंदर सीताराम की बगीची के पास का है। अक्सर यहां ऐसे नजारे सामने आते रहते हैं। आज भी करीब 10 फीट लंबा अजगर शिकार की तलाश में एक पेड़ पर चढ़ गया। काफी देर तक अजगर पेड़ पर ही बैठा रहा। अजगर और सांप पेड़ों पर पक्षियों, उनके अंडों, बच्चों और छोटे जानवरों का शिकार करने चढ़ते हैं। केवलादेव नेशनल पार्क में अजगर की भरमार है। उनके लिए नेशनल पार्क में पाइथन पॉइंट के नाम से एक जगह भी है। जहां अक्सर अजगर देखे जा सकते हैं। केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में 150 से ज्यादा अजगर पाए जाते हैं। इनकी लंबाई 10 से 20 फीट तक है। एक रिसर्च के दौरान यह सामने आया था कि नेशनल पार्क और पार्क के अपेक्षा में ज्यादा अजगर और सांप पाए जाते हैं। क्योंकि यहां का वातावरण अजगर और सांपों के लिए अनुकूल है। पार्क में आसानी से उन्हें भोजन भी मिल जाता है।

अधिकारी के घर मिली लग्जरी कारें किसी और नाम की:

पोर्श-डिफेंडर, जगुआर और स्कॉर्पियो कार के मालिकों को नोटिस भेजेंगे;3 लॉकर मिले

द पुलिस पोस्ट

जयपुर। जयपुर एसीबी टीम ने आय से अधिक संपत्ति के मामले में राजकॉम्प इन्फो सर्विसेज लिमिटेड ग्रुप के जनरल मैनेजर छत्रपाल सिंह के यहां शनिवार को छापेमारी की थी। यहां पोर्श,डिफेडर, जगुआर और स्कॉर्पियो कारें मिली। सर्च में सामने आया कि ये कारें किसी और के नाम की है, जिसे छत्रपाल सिंह काम में ले रहा था। दरअसल, एसीबी ने शनिवार को छत्रपााल सिंह के जयपुर, दिल्ली, गाजियाबाद और हनुमानगढ़ में 8 ठिकानों पर सर्च किया था। इनमें दिल्ली और गाजियाबाद के दो ठिकानों पर रविवार सुबह भी सर्च हुआ। सर्च से लौटी 6 टीम पूरा रिकॉर्ड डीजी एसीबी को देंगे। अब तक की जांच में सामने आया कि सर्च में इन कारों के साथ बीएमडब्ल्यू बाइक भी किसी और के नाम की है। ऐसे में एसीबी इन कार और बाइक मालिकों को नोटिस जारी कर इन्हें पूछताछ के लिए बुलाएगी।

तीन लॉकर मिले, सोमवार को बैंक अकाउंट और लॉकर खंगालेगी

एसीबी को सर्च में 8 बैक अकाउंट मिले है। इसके अलावा दिल्ली, गाजियाबाद और हनुमानगढ़ में तीन लॉकर भी मिले है। टीम सोमवार को ये बैंक अकाउंट और लॉकर खंगालेगी।जांच में सामने आया कि जो लग्जरी कार और बाइक छत्रपाल सिंह के यहां मिले है, वह उसके नाम के नहीं है। ऐसे में इन कार-बाइक मालिकों को भी एसीबी सोमवार को नोटिस जारी कर उन्हें बुलाकर पूछताछ करेगी। ऐसे में पता लगाया जाएगा कि किसी और की कारें किस के लिए ली गई थी।

अब तक 2.39 करोड़ रुपए मिले

एसीबी डीजी रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया- एसीबी को शिकायत मिली कि राजकॉम्प ग्रुप के जनरल मैनेजर छत्रपाल सिंह ने अपने पद का गलत इस्तेमाल कर रुपए शामिल किए। ड्यूटी के दौरान विभिन्न जमीन, फ्लैट, मकान और लग्जरी वाहनों पर निवेश किया हुआ है। इस पर शिकायत का सत्यापन कराया गया। उन्होंने बताया- छत्रपाल सिंह के राजकीय सेवा शुरू करने से अब तक 2.39 करोड़ रुपए (85.62 प्रतिशत) की संपत्ति वैध आय से ज्यादा होना पाया गया है। इस पर एफआईआर दर्ज कर एडिशनल एसपी संदीप सारस्वत को जांच दी गई। एसीबी डीजी ने बताया- जांच में सामने आया कि छत्रपाल सिंह ने अपने और परिजनों के नाम से आय से अधिक चल-अचल संपत्तियां अर्जित की है। इनके पास करोड़ों रुपए से अधिक की जमीन है। आरोपी के परिवार के नाम जयपुर में फ्लैट-मकान और करोड़ों रुपए की पांच गाड़ियां हैं। तलाशी में आरोपी के महंगे रिसोर्ट में रुकने संबंधी कागजात मिले है। साथ ही विदेश यात्राओं की जानकारी भी मिली है।

ये लग्जरी गाड़ियां मिलीं थी

रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया- जांच में एसीबी की टीम को दिल्ली-गाजियाबाद में सिंह के आवास और अन्य ठिकानों से एक पोर्श, एक जगुआर, डिफेंडर कार, महिंद्रा थार, एक स्कॉर्पियो, शेवर्ले कुज जैसी लग्जरी गाड़ियां मिली हैं। एक बीएमडब्ल्यू बाइक और करीब 6 लाख रुपए कैश मिले हैं।

छत्रपालसिंह के इन ठिकानों पर एसीबी की रेड

जयपुर में सोडाला स्थित महादेव नगर में मकान नंबर 31 पर सर्च।, जयपुर में अजमेर रोड पर श्याम नगर सब्जी मंडी के सामने एयर अपार्टमेंट के फ्लैट नंबर 1206, 1306 और 1401 पर सर्च।, जयपुर के अशोक नगर (सी स्कीम) डियर पार्क के सामने युधिष्ठिर मार्ग के प्लॉट नंबर 25 में तीसरे फ्लोर पर फर्म हैप्पी हार्ट फाउंडेशन फर्म में सर्च।, जयपुर के सिविल लाइन स्थित इंडसइंड बैंक में अधिकारी की पहली पत्नी मोहिनी राठौड़ के लॉकर की जांच के लिए टीम पहुंची।, जयपुर के राजा पार्क में लेन नंबर 6 में स्थित सिंपली डिवाइन स्पा पर टीम पहुंची।, जयपुर में योजना भवन में राजकॉम्प इन्फो सर्विसेज लिमिटेड के ऑफिस में टीम पहुंची।, हनुमानगढ़ के वार्ड नंबर 147 में 43 एसएसडब्लयू डबली बास मोलवी पर टीम पहुंची।, उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में राजनगर एक्सटेंशन के सी- 402 फॉर्च्यून रेजीडेंसी के चौथी फ्लोर पर सर्च।, गाजियाबाद के वैशाली में सेक्टर 9 स्थित फर्म ला-टेक सॉल्यूशन में सर्च।

समाजसेवी संस्थाएं जरूरतमंदों की मदद में अहम भूमिका निभाई बागडे

द पुलिस पोस्ट

अजमेर ! राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने कहा कि समाज सेवी संस्थाएं जरूरतमंदों की मदद में अहम भूमिका निभाए । राज्यपाल बागड़े जवाहर फाउंडेशन एवं राजस्थान फुटबाल एसोसिएशन के प्रतिनिधियों से औपचारिक बातचीत कर रहे थे । उन्होंने कहा कि ग्रामीण परिवेश की महिलाओं का खेल के क्षेत्र में सामग्र विकास में सकारात्मक भूमिका निभाए । इस अवसर पर जवाहर फाउंडेशन के प्रभारी रजनीश वर्मा ने जवाहर फाउंडेशन की द्वारा अपने तीनों फ्लैगशिप कार्यक्रम स्वाभिमान भोज ,स्वाभिमान जल और स्वाभिमान शिक्षा के माध्यम से समाज सेवा के क्षेत्र में किए गए कार्यों के बारे में अवगत कराया । उन्होंने बताया कि जवाहर फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष उद्योगपति एवं समाजसेवी रिजु झुनझुनवाला की पहल पर जवाहर

फाउंडेशन सामाजिक सरोकारों में स्वाभिमान भोज रसोई ,पर्यावरण एवं वन संरक्षण, वृक्षारोपण ,कला खेल, साहित्य, खाद्य सुरक्षा ,जल संरक्षण स्वास्थ, स्वच्छ पेयजल, महिला सशक्तिकरण ,भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक आयोजन के विभिन्न कार्यक्रमों माध्यम से अजमेर भीलवाड़ा जयपुर और बांसवाड़ा में निरंतर कार्य कर रहा है ! इस अवसर पर राजस्थान फुटबॉल महिला विंग की वाइस चेयरमैन प्रतिभा मीणा, राजस्थान फुटबॉल संगठन के सेक्रेटरी दिलीप सिंह शेखावत, कोषाध्यक्ष कैलाश खटीक जवाहर फाउंडेशन के प्रभारी रजनीश वर्मा आदि उपस्थित रहे ! गौरतलाब बात है कि समाजसेवी एवं उद्योगपति रिजु झुनझुनवाला जिसके नेतृत्व में उनके द्वारा गत 6 वर्षों से सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़कर संस्था कार्य कर रही है .उन्होंने फाउंडेशन के द्वारा 10 स्थान पर स्वाभिमान भोज रसोई के माध्यम से अपने सा8माजिक सरोकार के तहत गरीबों ,जरूरतमंद ,असहाय, निर्धन ,दिहाड़ी मजदूर लोगों और निशक्तजन को मात्र ?1 में रसोई में भरपेट भोजन उपलब्ध कराया जा रहा .इसी क्रम में अजमेर स्थित संभाग के सबसे बड़े अस्पताल जेएलन में आगामी कुछ दिनों में स्वाभिमान भोज रसोई आम जनों और मरीज के परिजनों के लिए जल्द शुरू करने जा रहे हैं. महामहिम राज्यपाल ने संस्था को अपना सामाजिक दायित्व निभाते रहने और समाज के प्रति सकारात्मक भूमिका निभाते रहने और सजग रहने को प्रतिनिधि मंडल को कहा

बीएपी के टिकट घोषणा के पास पार्टी में फूट:

पोपट खोखरिया के घर जुटे समर्थक, केंद्रीय एकीकरण समिति से मिलकर लेंगे आगे का फैसला

डूंगरपुर। डूंगरपुर के चौरासी विधानसभा सीट पर उपचुनाव होने है। उपचुनाव में बीएपी की ओर से अनिल कटारा को उम्मीदवार घोषित करने के बाद पार्टी में फूट नजर आने लगी है। भील प्रदेश युवा मोर्चा के संयोजक पोपट खोखरिया के आह्वान पर उनके समर्थक उनके निवास पर जुटे। वहीं पोपट खोखरिया को टिकट नहीं मिलने पर आक्रोश जताया। पोपट खोखरिया की ओर से एक समिति बनाई गई है। जो बीएपी की केंद्रीय एकीकरण कमेटी से बात करेगी। वहीं उसके बाद आगे का फैसला लिया जाएगा। चौरासी विधानसभा सीट पर उपचुनाव को लेकर बीएपी ने चिखली ब्लॉक से जिला परिषद सदस्य अनिल कटारा को अपना उम्मीदवार घोषित किया है। उम्मीदवार की घोषणा के बाद अब पार्टी में फूट नजर आने लगी है। बीएपी के पैनल में शामिल भील प्रदेश युवा मोर्चा के प्रदेश संयोजक पोपट खोखरिया ने टिकट नहीं मिलने पर नाराजगी जताई है। वहीं आज उन्होंने अपने टेंबा करावाड़ा निवास पर समर्थकों की बैठक बुलाई। बैठक में बड़ी संख्या में उनके समर्थक शामिल हुए। समर्थकों ने पोपट खोखरिया को टिकट नहीं दिए जाने पर आक्रोश जताया। बैठक में पोपट खोखरिया ने एक समिति बनाई है। समिति बीएपी की केंद्रीय एकीकरण समिति से बात करेगी।

लव गार्डन स्थित घूमर कला एवं शिक्षा सेवा संस्थान निरंतर चल रहे अपने वार्षिकोत्सव टशन को इस बार फिर दर्शकों के बीच लाने को तैयार है

भीलवाड़ा/ लव गार्डन स्थित घूमर कला एवं शिक्षा सेवा संस्थान निरंतर चल रहे अपने वार्षिकोत्सव टशन को इस बार फिर दर्शकों के बीच लाने को तैयार है। टशन-2024 घूमर का 20 वार्षिकोत्सव होने जा रहा है। 27 अक्टूबर 2024 को होने वाले इस कार्यक्रम में कई तरह की प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी जैसे मिस भीलवाड़ा, मिसेस भीलवाड़ा, मिस्टर भीलवाड़ा, प्रिंस, प्रिंसेज, क्यूट बेबी, मास्टर बेबी, स्वीट बेबी और विभिन प्रकार के डांस जैसे देश भक्ति,राजस्थानी, क्लासिकल, हिपहॉप आदि। योगा और शक्ति प्रदर्शन भी कार्यक्रम के आकर्षण होंगे। कार्यक्रम से पूर्व टैलेंट राउंड रखा गया जिसमें सभी प्रतिभागियों ने अपना टैलेंट दिखाया` भाग लेने वाले प्रतियोगी की उम्र कम से कम 2 महीने से ऊपर रखी गई है। संस्था के अध्यक्ष चंद्र प्रकाश अमरवाल और सचिव विक्रांत अमरवाल ने बताया की कार्यक्रम की सभी तैयारियां जोरो शोरो से चल रही है। कार्यक्रम की सभी जानकारी इंस्टाग्राम और फेसबुक पर घूमर द डांस स्कूल के पेज पर शेयर की जा रही है। विक्रांत अमरवाल ने बताया की आज इनोवेटिव क्रिएटिव स्टूडियो पर जो टेलेंट १ङ्ग४ल्ला हुआ हे उसमे सभी प्रतिभागियों ने डांस , सिंगिंग, मिमिक्री , स्केट डांस, हुलाहूप डांस, आदि तरह से अपने टेलेंट का लोहा मनवाया` निर्णायकगण की भूमिका में मनीष वैष्णव , मनोज शर्मा , वनिता अमरवाल, अदिति शर्मा , सन्नी ठकरानी, मूमल चौधरी, पूजा सिंघावत, रहे

जयपुरः बहरोड़ बीजेपी नेता मोहित यादव और पूर्व विधायक बलजीत यादव के समर्थकों में हुई मारपीट

द पुलिस पोस्ट

जयपुरः बहरोड़. मांडण क्षेत्र में रविवार की शाम को बहरोड़ के विधायक डॉ जसवंत सिंह यादव के बेटे मोहित यादव और पूर्व विधायक बलजीत यादव के समर्थकों में झड़प हो गई. मामले की सूचना लगते ही मांडण पुलिस मौके पर पहुंची. जानकारी में सामने आया है कि दोनों ही क्षेत्र में कार्यक्रम में भाग लेने गए थे. जैसे ही मांढन में दोनों की गाड़ियों का आमना-सामना हुआ, तो बलजीत यादव के चालक ने मोहित यादव की गाड़ी को टक्कर मार दी, जिसके बाद माहौल बिगड़ गया. दोनों नेताओं के समर्थकों में मारपीट हो गई. उसके बाद मांडन पुलिस थाने में बीजेपी नेता मोहित यादव पहुंचे और मामला दर्ज कराने के लिए एफआईआर दी जा रही है.

बहरोड़ की राजनीति में आया उबाल:

बहरोड़ के वर्तमान विधायक डॉ जसवंत सिंह यादव पर बलजीत यादव के विधायक रहने के दौरान अभद्र टिप्पणी और जसवंत सिंह यादव के बेटे पर जानलेवा हमला करवाने की पुरानी रंजिश चली आ रही है. करीब तीन साल पहले बर्दोद के बाद बहरोड़ के पूर्व विधायक बलजीत यादव ने अपने समर्थकों से मोहित यादव पर जानलेवा हमला करवाया था. जिसके बाद बहरोड़ की राजनीति गरमा गई थी. रविवार की शाम को दोनों ही नेताओं के समर्थक आमने- सामने हो जाने के बाद राजनीति गरमा गई है. मांडन थाना प्रभारी बाबूलाल मीणा ने बताया कि रविवार शाम को बहरोड़ के बीजेपी नेता मोहित यादव और पूर्व विधायक बलजीत के समर्थकों के बीच मारपीट की सूचना मिली थी. मौके पहुंच कर मामले की जानकारी ली. साथ ही घटना के दौरान मारपीट करने वाले दो लोगों को हिरासत में लिया है. पूरा मामला क्या है ये जांच के बाद ही पता चल पाएगा.

आज दिनांक 20 अक्टूबर 2024 को स्थानीय श्री राजपूत छात्रावास रामगढ़ में क्षत्रिय कर्मचारी जिला संस्थान जैसलमेर के सौजन्य में बैठक संपन्न हुई।

द पुलिस पोस्ट

क्षत्रिय कर्मचारी संगठन जैसलमेर के बैनर तले स्थानीय श्री राजपूत छात्रावास रामगढ़ में कर्मचारी बैठक व विद्यार्थी संवाद का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें अतिथि के रूप में श्रीमान देरावर सिंह साकडा कोषाधिकारी श्रीमान खेमेंद्र सिंह जाम पर्यटन अधिकारी श्री मान चंद्रवीर सिंह महिला एवं बाल विकास अधिकारी जैसलमेर श्रीमान झबरसिंह नगर परिषद आयुक्त उपस्थित रहे कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्ज्वलन से हुई उसके बाद अतिथि परिचय विद्यार्थी संवाद रहा । केरियर काउंसलिंग में विभिन्न प्रकार के जिज्ञासा वस प्रश्न पूछे। श्रीमान देरावर सिंह साकडा कोषाधिकारी ने बच्चों को भविष्य में आगे बढ़ने व परिश्रम करने का आह्वान किया वहीं चंद्रवीर सिंह जी ने अपने अनुभव से वर्तमान परिपेक्ष में अंग्रेजी भाषा को कैसे मजबूत बनाएं इस पर चर्चा की तथा नगर परिषद आयुक्त श्री झब्बरसिंह ने 10 नवंबर को राजपूत प्रतिभा सम्मान समारोह में शामिल होने का आह्वान किया अंत में श्री खेमेन्द्र सिंह जाम पर्यटन अधिकारी ने सबका धन्यवाद ज्ञापित किया तथा बच्चों को परिश्रम पर विश्वास करने का आह्वान किया इस कार्यक्रम में समस्त शिक्षाविद श्री अमर सिंह राणाऊ भूर सिंह भोजराज सिंह की ढाणी खीम सिंह नवल सिंह की ढाणी श्री पदम सिंह रामगढ़ जुझार सिंह नवल सिंह की ढाणी भगवान सिंह राघवा प्रेम सिंह नवल सिंह की ढाणी भगवान सिंह सेऊवा पाचराज सिंह भोजराज सिंह की ढाणी रतन सिंह सोनू कवराज सिंह सोनू चंदन सिंह नवल सिंह की ढाणी मनोहर सिंह नवल सिंह की ढाणी महेंद्र सिंह रणाऊ श्रवण सिंह नोख के साथ स्थानीय विद्यार्थियों की गरिमा में उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन हमीर सिंह जोगा ने किया ।

छात्रा के साथ मारपीट करने वाले टीचर पर एफआईआर, दरी-पट्टी ठीक करने के नाम पर की पिटाई, शिक्षा मंत्री ने दिए मुकदमे के निर्देश

द पुलिस पोस्ट

कोटा। रामगंज मंडी विधानसभा क्षेत्र के जुल्मी में चल रहे सरकार आपके द्वारा समस्या समाधान शिविर में एक सरपंच सरकारी स्कूल में पढ़ने वाली एक मासूम बालिका को लेकर मंत्री के सामने पेश हुए। सरपंच ने मंत्री को बताया कि इस मासूम बालिका का हाथ इसकी स्कूल के टीचर ने तोड़ दिया है। यह सुनते ही एक बार की पूरे शिविर में उपस्थित लोग सन रह गए। इस में मंत्री दिलावर ने पीड़ित मासूम बालिका से पूरा हाल पूछा। शनिवार को रामगंजमंडी के जुल्मी में समस्या समाधान शिविर का आयोजन किया गया था। जिसमें कई समस्याएं लेकर लोग पहुंचे थे। देर शाम करीब सात बजे एक सरकारी स्कूल के पांचवी कक्षा की बालिका भी गांव के सरपंच के साथ शिविर में पहुंची।
पीड़िता बालिका जो राजकीय उच्च माध्यमिक स्कूल तेलिया खेड़ी में कक्षा 5वीं में पढ़ती है। उसने बताया कि वह शनिवार को स्कूल गई थी। कक्षा में उसके शिक्षक अब्दुल अजीज ने उसे दरी पट्टी ठीक करने को कहा। छात्र का कहना है कि उसने शिक्षक के कहे अनुसार दरी पट्टी ठीक कर दी थी परंतु फिर भी शिक्षक आग बबूला हो गया और बोला कि तू मेरी बात नहीं मानती और डंडा लेकर पिटाई शुरू कर दी। मारते मारते उसका हाथ तोड़ दिया। रोती हुई बालिका घर पहुंची। जानकारी मिलने पर ग्राम पंचायत असकली के सरपंच आबिद खान पीड़ित बालिका को लेकर जुल्मी में चल रहे शिविर में शिक्षा मंत्री सामने पहुंचे। शिक्षा मंत्री ने शिविर में ही मौजूद उपाधीक्षक घनश्याम मीणा को मौके पर ही जीरो रिपोर्ट दर्ज कर संबंधित थाने को प्रेषित करने तथा आरोपी शिक्षक को तत्काल राउंड अप करने के निर्देश दिए।

16 साल की लड़की, मंदसौर में होने वाली थी शादी:

टीम पहुंची तो मेहंदी-हल्दी रस्म चल रही थी;हड़कंप मचा,बालिका गृह भेजा

द पुलिस पोस्ट

कोटा। कोटा में 16 साल की लड़की की शादी की तैयारियां चल रही थी। शादी आज (रविवार) को मध्य प्रदेश के मंदसौर में सामूहिक विवाह सम्मेलन में होने वाली थी। टीम पहुंची तो लड़की को हल्दी मेहंदी लगी थी। कार्रवाई की भनक से परिवार में हड़कंप मच गया। टीम ने लड़की के दस्तावेज देखे तो नाबालिग मिली। परिवार को टीम ने शादी न करने के लिए पाबंद किया और लड़की को बालिका गृह भेजा। मामला कोटा के रामगंजमंडी थाना इलाके का है। यहां बाल अधिकारिता विभाग, चाइल्ड हेल्पलाइन, सृष्टि सेवा समिति, पुलिस की संयुक्त टीम ने कार्रवाई कर नाबालिग लड़की की शादी रुकवाई। साथ ही जिला प्रशासन की टीम को पाबंद किया।

बाल विवाह की सूचना मिली तो घर पहुंची टीम

जिला बाल संरक्षण इकाई व बाल अधिकारिता विभाग कोटा के सहायक निदेशक अर्पित जैन ने बताया- हमें रामगंजमंडी थाना क्षेत्र में बाल विवाह की सूचना मिली थी। इसके बाद चाइल्ड हेल्पलाइन तथा सृष्टि सेवा समिति की टीम को कार्यवाही के निर्देश दिए। इन टीमों ने थाने में जाकर पुलिस को जानकारी दी। थाना इंचार्ज के निर्देश पर संयुक्त टीम लड़की के घर पहुंची। बाल संरक्षण अधिकारी दिनेश शर्मा ने बताया- टीम जब लड़की के घर पहुंची तो वहां विवाह की तैयारी चल रही थी। लड़की को हल्दी मेहंदी लगी हुई थी। घर में शादी की रस्में चल रहीं थी। अचानक से टीम को देखकर परिवार में हड़कंप मच गया। टीम ने जब लड़की के परिजन से बात की तो पता चला कि शादी मध्य प्रदेश के मंदसौर में एक विवाह सम्मेलन में होने वाली है। टीम ने लड़की के जन्म संबंधी दस्तावेज जांचे तो वह 16 साल की मिली। इसके बाद उसे बालिका गृह में अस्थाई आश्रय दिलवाया गया।

अवैध वसूली करने वाले पार्किंग ठेकेदारों पर होगी कार्रवाई- मेयर

कुसुम यादव बोली- जनता के साथ लूट नहीं करूंगी बर्दाश्त

द पुलिस पोस्ट

जयपुर। जयपुर में लगातार आम जनता के साथ पार्किंग के नाम पर की जा रही चौथ वसूली को रोकने के लिए अब नगर निगम द्वारा अभियान चलाया जाएगा। हेरिटेज मेयर कुसुम यादव ने कहा कि आम जनता द्वारा पिछले लंबे वक्त से पार्किंग के नाम पर अवैध वसूली की शिकायत मिल रही थी। जिसे रोकने के लिए अब निगम क्षेत्र में अभियान चलाया जाएगा। ताकि आम जनता को राहत मिल सके। कुसुम यादव ने कहा कि आम जनता के साथ किसी भी तरह की चौथ वसूली को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। नगर निगम हेरिटेज क्षेत्र में कोई भी

ठेकेदार या फिर निगम कर्मचारी किसी तरह की गफलत या गड़बड़ी कर रहा है। या फिर किसी भ्रष्टाचार में लिप्त है तो उसके खिलाफ सख्त एक्शन लिया जाएगा। हमारी सरकार आम जनता को भ्रष्टाचार मुक्त शासन देने के लिए सत्ता में आई है। इस नीति पर काम करते हुए अब नगर निगम हेरिटेज क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार और भय मुक्त वातावरण बनाना हमारा लक्ष्य है। ऐसे में हमारी टीम पूरे शहर में घूम अवैध वसूली और भ्रष्टाचार की जांच करेगी। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों मिली शिकायतों के आधार पर कुछ प्रकरणों की जांच शुरू भी कर दी गई है। जिनकी रिपोर्ट आने के बाद दोषियों के खिलाफ सख्त एक्शन लिया जाएगा। इसके साथ ही अगर भ्रष्टाचार में निगम का कोई अधिकारी भी लिप्त हुआ। तो उसके खिलाफ भी सख्त कार्रवाई की जाएगी। बता दें कि नगर निगम हेरिटेज क्षेत्र में पिछले लंबे वक्त से पार्किंग के नाम पर अवैध वसूली का काला खेल चल रहा है। जिसकी कई बार नगर निगम अधिकारियों तक भी शिकायत पहुंच चुकी है। लेकिन ठेकेदारों से मिली भगत के चलते अब तक अवैध वसूली करने वाले पार्किंग ठेकेदारों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई है। ऐसे में अब देखना होगा सुशासन का नारा देने वाली मेयर कुसुम यादव कब तक जनता को लूटने वाले ठेकेदारों के खिलाफ एक्शन लेगी।

सीईटी परीक्षा मंगलवार से, रोडवेज बसों में निःशुल्क यात्रा की सुविधा

जिला कलक्टर ने संबंधित अधिकारियों को जारी किए आदेश

परीक्षार्थियों के लिए निजी बसों की भी व्यवस्था रहेगी'

द पुलिस पोस्ट

बाड़मेर, समान पात्रता परीक्षा सीनियर सैकंडरी स्तर-2024 के लिए जिला प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है। तीन दिन तक आयोजित होने वाली परीक्षा के लिए जिला मुख्यालय पर अन्य जिलों में जाने वाले परीक्षार्थियों के लिए पर्याप्त बसों की व्यवस्था की गई है ' जिला कलक्टर टीना डाबी ने बताया कि राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड जयपुर की ओर से समान पात्रता परीक्षा सीनियर सैकंडरी स्तर 22 से 24 अक्टूबर तक प्रथम पारी में प्रातः 9 से दोपहर 12 बजे एवं द्वितीय पारी में दोपहर 3 से सांय 6 बजे तक बाड़मेर जिला मुख्यालय एवं अन्य जिला मुख्यालयों पर आयोजित की जा रही है। उन्होंने बताया कि इस परीक्षा के लिए बाड़मेर जिले के परीक्षार्थियों को अजमेर एवं जोधपुर जिले के परीक्षा केन्द्रों का आवंटन किया गया है ' जिला कलक्टर ने बताया कि बाड़मेर से 21 से 23 अक्टूबर तक प्रतिदिन अनुमानित 12 हजार परीक्षार्थी प्रतिदिन अजमेर एवं जोधपुर के लिए प्रस्थान करेगें। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार के निदेर्शानुसार परीक्षार्थियों के लिए रोडवेज की बसों में निःशुल्क यात्रा अनुमत की गई है। उन्होंने बताया कि बाड़मेर डिपो में प्रर्याप्त बसें उपलब्ध नहीं होने के कारण जिला प्रशासन ने परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए जिला परिवहन अधिकारी बाड़मेर के माध्यम से निजी बसो की भी व्यवस्था करवाई है' निजी बसों में परीक्षार्थी वाजिब किराया अदा पर यात्रा कर सकते है। प्रभारी अधिकारी नियुक्त : जिला कलक्टर टीना डाबी ने सीईटी परीक्षा के दौरान बाड़मेर जिला मुख्यालय पर स्थित वृद्धिचन्द जैन केन्द्रीय बस स्टैंड एवं पीजी कॉलेज के सामने निजी बस स्टैंड पर बसो की उपलब्धता, पेयजल, हेल्प डेस्क,मेडिकल टीम,चल शौचालय,साफ सफाई तथा कानून एवं व्यवस्था बनाये रखने के लिए बाड़मेर उपखंड अधिकारी वीरमा राम को प्रभारी अधिकारी एवं तहसीलदार बाड़मेर को सहायक प्रभारी अधिकारी नियुक्त किया है। इसके अलावा जिला पुलिस अधीक्षक को कानून एवं व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रर्याप्त पुलिस जाब्ते की नियुक्ति करने, रोडवेज डिपो मैनेजर को राज्य सरकार के निदेर्शानुसार परीक्षार्थियों के लिए पर्याप्त बसों की व्यवस्था एवं इसके लिए हेल्प डेस्क की स्थापना करने के निर्देश दिए गए है ' इसी तरह प्रमुख चिकित्सा अधिकारी बाड़मेर को दोनों बस स्टैंडो पर आवश्यक दवाइयों सहित मेडिकल टीम उपलब्ध कराने, नगर परिषद आयुक्त को दोनों बस स्टैंडो पर साफ सफाई एवं पीने के लिए पानी की व्यवस्था करने तथा जिला परिवहन अधिकारी को निजी बस स्टैंड पर परीक्षार्थियों की संख्या को देखत हुए बसों की व्यवस्था करवाने एवं इसके लिए हेल्प डेस्क की स्थापना करने के निर्देश दिए गए है ' जिला कलक्टर ने बताया कि समस्त अधिकारियों को आपस में समन्वय स्थापित करते हुए उनको सौंपे गए दायित्वों का निर्वहन करने के निर्देश दिए गए है।उन्होंने बताया कि परीक्षा आयोजन के दौरान आपसी समन्वय के लिए जिला कलेक्ट्रेट में नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है।इसके दूरभाष 02982-220007 है '

सीईटी अभ्यर्थी अब 5 दिन कर सकेंगे नि:शुल्क यात्रा

सीईटी परीक्षा देने वाले अभ्यर्थी अब रोडवेज बसों में पांच दिन निशुल्क यात्रा कर सकेंगे। इसमें परीक्षा से 2 दिन पहले और परीक्षा खत्म होने के 2 दिन बाद तक का समय शामिल रहेगा। इसके अलावा राजस्थान के किसी भी शहर गांव या कस्बे से बसों में सफर कर सकेंगे। पहले परीक्षा देने वाले अभ्यर्थी 3 दिन अपने गृह जिले से परीक्षा केंद्र तक ही यात्रा कर सकते थे ' निःशुल्क यात्रा के लिए अभ्यर्थी को प्रवेश पत्र और आधार कार्ड दिखाना होगा

दौसा में पुलिस ने पकड़ा अवैध शराब का कंटेनर:

सामान की आड़ में छिपा रखे थे हरियाणा निर्मित शराब के कार्टन, गुजरात ले जा रहे थे

दौसा। दौसा में विधानसभा उपचुनाव के मद्देनजर सदर थाना पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए कंटेनर से अवैध शराब पकड़ी है। पुलिस की दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के भांडारेज इंटरचेंज के पास नाकाबंदी के दौरान कार्रवाई को अंजाम दिया। जहां वाहनों की सघन तलाशी के दौरान हरियाणा नंबर के कंटेनर से शराब की पेटियां बरामद हुई हैं। मौके पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक लोकेश सोनवाल, सदर थाना इंचार्ज हवा सिंह यादव व ड्यूटी ऑफिसर एएसआई विजयपाल सिंह समेत पुलिस जाप्ता का मौजूद रहा। हरियाणा निर्मित शराब की कीमत का आंकलन लाखों रुपए में होना बताया जा रहा है। जिसकी फिलहाल काउंटिंग की जा रही है।

पुणे-जोधपुर फ्लाइट को बम से उड़ाने की धमकी:

पैसेंजर्स के सामान की स्कैनिंग की, 100 से ज्यादा यात्री सवार थे; फ्लाइट को रवाना करने की तैयारी

द पुलिस पोस्ट

जोधपुर। पुणे से जोधपुर आने वाली इंडिगो की फ्लाइट को ई-मेल भेजकर बम से उड़ाने की धमकी मिली। पुलिस और सीआईएसएफ के अधिकारी भी मौके पर पहुंचे। एयरपोर्ट पर विमान की तलाशी ली गई। डीएसपी ईस्ट आलोक श्रीवास्तव ने बताया- पैसेंजर के सामान की तलाशी ली गई, इसमें अभी तक कोई विस्फोटक सामान नहीं मिला है। एजेंसियों को सूचना दे दी गई है। फ्लाइट को आगे रवाना करने की तैयारी की जा रही है। बम निरोधी दस्ते और डॉग स्क्वॉड को भी मौके पर बुलाया गया था।जानकारी के अनुसार, एयरपोर्ट अथॉरिटी को इंडिगो की फ्लाइट 6133 को बम से उड़ाने का ईमेल आया था। इसके बाद एयरपोर्ट अथॉरिटी ने एयरपोर्ट थाने को सूचना दी।

100 से ज्यादा पैसेंजर सवार थे

जानकारी के अनुसार, फ्लाइट में 100 से ज्यादा यात्री सवार थे। इसकी सूचना मिलने के बाद तुरंत ही फ्लाइट को आइसोलेशन-वे में लैंड करवाया गया। धमकी मिलने के बाद एयरपोर्ट पर अफरा-तफरी का माहौल हो गया। यात्रियों के सामान की भी तलाशी ली गई। अभी तक कोई बम जैसी वस्तु नहीं मिली है। यह फ्लाइट पुणे से सुबह 11:50 पर रवाना हुई थी। दोपहर 1:07 पर जोधपुर एयरपोर्ट पर लैंड हुई थी। इसी बीच एयरपोर्ट प्रशासन को फ्लाइट में बम होने की सूचना मिली।

किशनगढ़ एयरपोर्ट पर मिल चुकी है बम की सूचना

इससे पहले किशनगढ़ एयरपोर्ट पर 19 अक्टूबर को स्टार एयरलाइंस के विमान में बम की सूचना मिली थी। बम निरोधक दस्ते की ओर से सिक्योरिटी क्लियरेंस देने के बाद विमान को आगे रवाना किया गया था।

जयपुरः पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार में जारी फर्जी पट्टों की होगी जांच, SOG या ACB लेगी एक्शन

द पुलिस पोस्ट

जयपुरः पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार में चले प्रशासन शहरों के संग अभियान में जारी फर्जी पट्टों की एसओजी या एसीबी से जांच का दायरा फैलेगा। इसमें प्रदेशभर के विकास प्राधिकरण, नगर विकास न्यास, नगरीय निकायों में भी ऐसे मामलों की जांच सौंपी जा सकती है। इसके लिए नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन विभाग स्तर पर संभावना तलाशी जा रही है। सभी निकाय, विकास प्राधिकरण से एक बार फिर ऐसे सभी मामलों की सूची मांगी गई है। इनमें ज्यादातर मामले नगरीय निकायों के हैं। गौरतलब है कि नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा

ने दो दिन पहले जोधपुर में वहां के निगम और विकास प्राधिकरण के फर्जी पट्टों की जांच एसओजी या एसीबी से कराने की बात कही थी।

सदन में गूंजा था मामला:

यह मामला विधानसभा में भी गूंज चुका है। पूर्व यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल और खर्रा के बीच बहस भी हुई। नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने सदन में बताया था कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के समय में अभियान के दौरान भारी अनियमितताएं हुई, कई रिकॉर्ड-फाइलें गायब हैं। जांच के बाद 260 पट्टे निरस्त कर 25 एफआईआर दर्ज की गई है।

इस दिशा में हो काम:

सैटेलाइट इमेज का भी सहारा लें, ताकि पता लगाया जा सके कि जिस दिन के आधार पर पट्टे जारी किए गए, उस दौरान वहां योजना या भवन था भी या नहीं। सार्वजनिक सूचना जारी कर अधिकारिक रूप से जनता से शिकायत आमंत्रित करें, ताकि ज्यादा से ज्यादा प्रभावित लोग सामने आएं।

कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु जी से की मुलाकात, राइजिंग राजस्थान के संबंध में हुई चर्चा

द पुलिस पोस्ट

-कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु जी से भेंटकर कर राजस्थान की विकास योजनाओं और औद्योगिक प्रगति पर संवाद किया
-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के दूरदर्शी मार्गदर्शन में हम सभी अंत्योदय से सर्वोदय के लक्ष्य साथ विकसित भारत, समृद्ध राजस्थान के नवनिर्माण की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं : कर्नल राज्यवर्धन
-कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश प्रभु जी से की मुलाकात कर विभिन्न समसामयिक विषयों पर सार्थक चर्चा की
राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री और झोटवाड़ा से लोकप्रिय भाजपा विधायक कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने रविवार को विनम्र व कर्मठ व्यक्तित्व के धनी, वरिष्?ठ नेता, पूर्व केन्द्रीय श्री सुरेश प्रभु जी से आत्मीय भेंट की और मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस दौरान प्रदेश में संचालित विकास योजनाओं, औद्योगिक प्रगति व राइजिंग राजस्थान इन्वेस्टमेंट

समिट के तहत राज्य में वैश्विक निवेश सहित विभिन्न समसामयिक विषयों पर सार्थक चर्चा हुई। कैबिनेट मंत्री ने राजस्थान के आर्थिक विकास की दिशा में उठाए गए कदमों की जानकारी दी। कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के दूरदर्शी मार्गदर्शन में हम सभी अंत्योदय से सर्वोदय के लक्ष्य साथ विकसित भारत, समृद्ध राजस्थान के नवनिर्माण की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं।

महाराष्ट्र, झारखंड में हरियाणा दोहराया जाएगा

एस. सुनील

आदिवासी हों या पिछड़े या सदान या सामान्य जाति के लोग पांच साल के जेएमएम, कांग्रेस और राजद के राज में सबने किसी न किसी तरह की मुश्किल झेली है। सरकार का पूरा कार्यकाल भ्रष्टाचार के आरोपों और लूट पाट वाला रहा है। चुनाव से ठीक पहले राज्य सरकार ने खजाना खोल कर अनेक सेवाएं और वस्तुएं मुफ्त देने का वादा किया है लेकिन इस मामले में भी भाजपा का रिकॉर्ड बाकी पार्टियों से बहुत बेहतर है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हरियाणा के चुनाव प्रचार में कहा था कि हरियाणा कांग्रेस के लिए मध्य प्रदेश साबित होगा। उनकी बात सौ फीसदी सही साबित हुई। जिस तरह से मध्य प्रदेश में कांग्रेस हारी वैसे ही हरियाणा में जीत का पूरा माहौल बनाने और नैरेटिव सेट करने के बावजूद कांग्रेस हार गई क्योंकि वह न तो हरियाणा की 10 साल की डबल इंजन सरकार के प्रति बने प्रो इन्कम्बैंसी को समझ पाई और न कांग्रेस विरोध की अंतधार्रा को समझ पाई। जम्मू कश्मीर में भी नेशनल कॉन्फ्रेंस की जीत हुई है, कांग्रेस तो बुरी तरह से हारी ही है। उसकी सीटें 12 से घट कर छह रह गईं और भाजपा की 25 से बढ़ कर 29 हो गईं। असल में इस वास्तविकता को ज्यादातर राजनीतिक विश्लेषक नजरअंदाज कर रहे हैं कि भाजपा और उसकी सहयोगी पार्टियों की सरकारों के खिलाफ अपवाद के तौर पर ही कहीं एंटी इन्कम्बैंसी यानी सत्ता विरोधी माहौल पैदा हो रहा है। ज्यादातर जगहों पर प्रो इन्कम्बैंसी यानी सत्ता समर्थन की लहर पैदा हो रही है, जिससे एनडीए की सरकारें बार बार सत्ता में वापसी करती हैं।

इस बात को आंकड़ों के आधार पर भी समझा जा सकता है। केंद्र में ही देखिए तो 50 साल के बाद ऐसा हुआ कि कोई सरकार लगातार तीसरी बार जीती। नरेंद्र मोदी ने लगातार तीन बार प्रधानमंत्री बनने के पंडित नेहरू के रिकॉर्ड की बराबरी की। 1977 में कांग्रेस जब पहली बार हार कर सत्ता बाहर हुई तो उसके बाद किसी भी पार्टी की सरकार लगातार तीसरी बार नहीं लौटी। वह रिकॉर्ड पीएम नरेंद्र मोदी ने तोड़ा। इसी तरह अनेक राज्यों में देखा जा सकता है। हरियाणा में लगातार तीसरी बार भाजपा की ज्यादा बहुमत और ज्यादा वोट के साथ सरकार बनी। उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, गुजरात, असम, त्रिपुरा, गोवा, मध्य प्रदेश, बिहार, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, मेघालय, नगालैंड यानी 12 राज्यों में भाजपा और उसकी सहयोगी पार्टियों ने लगातार दो बार या उससे ज्यादा बार सरकार बनाई। इसके मुकाबले कुछ प्रादेशिक पार्टियों की तो सरकारें वापस लौटी हैं लेकिन कांग्रेस ने पिछले 10 साल में किस भी राज्य में लगातार दो बार सरकार नहीं बनाई है। इसका मतलब है कि कांग्रेस की जहां भी सरकार बनती है वहां पांच साल में उसके खिलाफ सत्ता विरोधी माहौल बन जाता है और लोग उसे हरा देते हैं। एक दिलचस्प आंकड़ा यह भी है कि दिल्ली जैसे अपवाद को छोड़ दें तो भाजपा लगातार 10 साल तक किसी भी राज्य में मुख्य विपक्षी पार्टी नहीं रही है। यानी वह जहां एक बार मुख्य विपक्षी पार्टी बनती है वहां वह पांच साल में सत्ता में वापसी करती है। राजस्थान, छत्तीसगढ़ आदि इसकी मिसाल हैं।

इन दोनों आंकड़ों को प्रकट करने का उद्देश्य यह बताना था कि झारखंड में भाजपा पांच साल से मुख्य विपक्षी पार्टी है और इस बार उसके वहां सत्ता में वापसी करने का समय है तो महाराष्ट्र में भाजपा के गठबंधन की सरकार है, जिसके खिलाफ कोई सत्ता विरोधी माहौल नहीं है क्योंकि आमतौर

पर एनडीए सरकारों के खिलाफ एंटी इन्कम्बैंसी नहीं होती है। इसलिए वहां भाजपा और उसकी सहयोगी पार्टियां लगातार तीसरी बार सरकार बनाएंगी। यह ध्यान रखने की जरुरत है कि 2019 में भी भाजपा चुनाव नहीं हारी थी। पांच साल तक यानी 2014 से 2019 तक सरकार चलाने के बाद जब भाजपा और शिव सेना गठबंधन चुनाव में गया तब कहा जा रहा था कि एंटी इन्कम्बैंसी है और एनडीए चुनाव हार जाएगा। लेकिन इसका उलटा हुआ। एनडीए को 161 सीटें मिलीं, जिसमें भाजपा ने 105 और शिव सेना ने 56 सीटें जीतीं। दोनों को मिला कर 42 फीसदी से ज्यादा वोट मिले। लेकिन चुनाव के बाद श्री उद्धव ठाकरे ढाई ढाई साल की सत्ता के लिए अड़ गए, जिसकी वजह से गठबंधन टूटा और कांग्रेस, एनसीपी ने जनादेश को धोखा देकर श्री उद्धव ठाकरे के साथ सरकार बनाई। महाराष्ट्र की जनता उस धोखे का भी इस बार बदला लेगी।

कांग्रेस, उद्धव ठाकरे और शरद पवार का गठबंधन यानी महा विकास अघाड़ी लोकसभा चुनाव के नतीजों के आधार पर इस उम्मीद में है कि उसकी जीत हो जाएगी। लेकिन लोकसभा चुनाव का नतीजा एक अपवाद था। उसमें भी अगर वोट के आंकड़े देखें तो भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन यानी महायुति को कांग्रेस गठबंधन के मुकाबले सिर्फ तीन फीसदी कम वोट मिले हैं। यानी वोट का अंतर सिर्फ तीन फीसदी है और उतने पर ही तकनीकी कारणों से सीटों का अंतर दोगुने का हो गया। अगर आंकड़ों की बात करें तो लोकसभा में भाजपा को सिर्फ नौ सीटें मिलीं, जबकि पिछली बार उसे 23 सीटें मिली थीं। यानी उसकी 14 सीटें कम हो गईं लेकिन उसको वोट का नुकसान सिर्फ 1.66 फीसदी का हुआ था। 2019 में भाजपा को 27.84 फीसदी वोट मिले थे और 2024 में 26.18 फीसदी वोट मिले। ध्यान रहे भाजपा ने पिछले चार चुनावों में 25 से 27 फीसदी का अपना वोट प्रतिशत बचाए रखा है।

जहां तक शिव सेना की बात है तो वह भी महाराष्ट्र के लोगों ने दिखा दिया कि असली शिव सेना श्री एकनाथ शिंदे की है। लोकसभा चुनाव में श्री उद्धव ठाकरे की शिव सेना 21 सीटों पर लड़ कर सिर्फ नौ सीट जीत पाई, जबकि एकनाथ शिंदे की शिव सेना ने 15 सीटें लड़ कर सात पर जीत हासिल की। ठाकरे के मुकाबले शिंदे की शिव सेना का स्ट्राइक रेट बेहतर रहा। शिव सैनिक पूरी तरह से उनके साथ रहे। उद्धव ठाकरे को कांग्रेस और एनसीपी का वोट मिला, जिसमें एक बड़ा हिस्सा उनके मुस्लिम वोट आधार का है। तभी हैरानी नहीं है कि श्री उद्धव ठाकरे और उनकी पार्टी के नेता स्वर्गीय बाला साहेब ठाकरे के हिंदुत्व का रास्ता छोड़ कर मुस्लिम तुष्टिकरण के रास्ते पर चल रहे हैं। जैसा केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने कहा कि श्री उद्धव ठाकरे कांग्रेस और एनसीपी की सोहबत में औरंगजेब को अपना नायक बना रहे हैं। सो, तुष्टिकरण की राजनीति चाहे उद्धव ठाकरे करें या शरद पवार करें या कांग्रेस करे उसका कोई फायदा महाराष्ट्र में नहीं होना है। महाराष्ट्र में श्री एकनाथ शिंदे की भाजपा समर्थित सरकार ने 'माझी लड़की बहिन योजना' के तहत महिलाओं को डेढ़ हजार रुपया महीना देना शुरू किया है। लाड़ला भाई योजना के तहत युवाओं को छह से 10 हजार रुपए महीना दिए जा रहे हैं। केंद्र सरकार ने आयुष्मान भारत योजना के तहत 70 साल से ज्यादा उम्र के बुजुर्गों को पांच लाख रुपए तक की मुफ्त चिकित्सा की घोषणा की है। किसानों के लिए रबी की फसलों पर एमएसपी में बढ़ोतरी हुई है। एकीकृत पेंशन की योजना आई है। ऐसी तमाम सकारात्मक योजनाओं के दम पर भाजपा और उसकी सहयोगी पार्टियों ने सत्ता के समर्थन की अंतधार्रा पैदा की है।

उधर झारखंड में पांच साल के जेएमएम, कांग्रेस और राजद के भ्रष्ट और परिवारवादी शासन से लोग ऊबे हुए हैं। वहां लोकसभा चुनाव में भाजपा को पिछली बार के मुकाबले तीन सीटों का नुकसान जरूर हुआ लेकिन अगर विधानसभा सीटों के हिसाब से देखें तो वह 50 से ज्यादा सीटों पर जीती थी। यानी लोकसभा चुनाव की तरह भी भाजपा गठबंधन का प्रदर्शन हो तो उसे 50 से ज्यादा सीटें मिलेंगी। झारखंड का विश्लेषण जो लोग भी 2019 के विधानसभा चुनाव के नतीजों के आधार पर कर रहे हैं उनको समझदारी का नया चश्मा लगाने की जरुरत है। 2019 में भी भाजपा हारी नहीं थी। पांच साल के शासन के बाद भी कोई एंटी इन्कम्बैंसी की लहर नहीं थी। उलटे श्री रघुवर दास के नेतृत्व में भाजपा का वोट 2.11 फीसदी बढ़ा था, जबकि जेएमएम के वोट में 1.71 फीसदी की कमी आई थी। इसके बावजूद जेएमएम को ज्यादा सीटें इसलिए मिल गईं क्योंकि भाजपा की गठबंधन की पुरानी सहयोगी आजसू अलग चुनाव लड़ी थी। उसने 53 सीटों पर उम्मीदवार उतार दिए और उसे आठ फीसदी से ज्यादा वोट मिले। इस बार का चुनाव पिछली बार से अलग इसलिए है क्योंकि आठ फीसदी की वोट पूंजी वाली आजसू भाजपा के साथ है और साढ़े पांच फीसदी वोट की पूंजी वाले श्री बाबूलाल मरांडी की भाजपा में वापसी हो गई है। यानी भाजपा के खाते में 13 फीसदी से ज्यादा वोट जुड़ा है। तभी लोकसभा में एनडीए का वोट 47 फीसदी पहुंच गया था। यह जरूर है कि भाजपा आदिवासी सीटों पर नहीं जीत पाई लेकिन इसका यह कतई मतलब नहीं है कि आदिवासी भाजपा के विरोधी हैं। अगर सबसे बड़े वोट समूह यानी आदिवासी का वोट भाजपा को नहीं मिलता तो उसका वोट प्रतिशत 47 तक कैसे पहुंचता? भाजपा ने झारखंड के सबसे बड़े आदिवासी नेता और विकास पुरुष की छवि वाले बाबूलाल मरांडी को प्रदेश अध्यक्ष बनाया है और दोनों पड़ोसी राज्यों छत्तीसगढ़ व ओडिशा में आदिवासी मुख्यमंत्री बनाया है। यह भी ध्यान रखने की जरुरत है कि झारखंड में आदिवासियों के सामने अस्तित्व का संकट है। बांग्लादेशी घुसपैठ से आदिवासी बहुल झारखंड की जनसंख्या संरचना बदल रही है। आदिवासियों की आबादी कम हो रही है। रोटी, बेटी और माटी का संकट खड़ा हो गया है। इसलिए भी आदिवासी समाज तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों से पीछा छुड़ा कर भाजपा का साथ देगा। आदिवासी हों या पिछड़े या सदान या सामान्य जाति के लोग पांच साल के जेएमएम, कांग्रेस और राजद के राज में सबने किसी न किसी तरह की मुश्किल झेली है। सरकार का पूरा कार्यकाल भ्रष्टाचार के आरोपों और लूट पाट वाला रहा है। चुनाव से ठीक पहले राज्य सरकार ने खजाना खोल कर अनेक सेवाएं और वस्तुएं मुफ्त देने का वादा किया है लेकिन इस मामले में भी भाजपा का रिकॉर्ड बाकी पार्टियों से बहुत बेहतर है।

(लेखक सिक्किम के मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग (गोले) के दिल्ली स्थित विशेष कार्यवाहक अधिकारी हैं, या लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं)

संपादकीय

युद्ध नहीं, सिर्फ बुद्ध

भारत दुनिया को युद्ध नहीं, बल्कि बुद्ध की शिक्षाएं दी हैं, दुनिया का समाधान बुद्ध में है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अंतरराष्ट्रीय अभिधम्म दिवस और पाली को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता दिये जाने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में यह कहा। संयुक्त राष्ट्र में अपने संबोधन को याद करते हुए कहा हमने दुनिया को बुद्ध की शिक्षाएं दी हैं। यह हमें याद दिलाता है कि करुणा और सद्भाव ही दुनिया को बेहतर स्थान बनाने की कुंजी है। अभिधम्म दिवस भगवान बुद्ध के अभिधम्म की शिक्षा देने के बाद अवतरण की याद दिलाता है, जिसे मूल रूप से पाली भाषा में लिखा गया है। पाली को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिए जाने को उन्होंने भगवान को बुद्ध को श्रद्धांजलि बताया। इस कार्यक्रम में चौदह देशों के शिक्षाविदों व भिक्षुओं ने भाग लिया। केंद्र सरकार ने अलग साहित्यिक परंपराओं वाली भाषाओं, जो मौलिक हों और जिन्हें किसी अन्य भाषा समुदाय से उधार नहीं लिया गया है, उन्हें शास्त्रीय भाषा के तौर पर चि त किया है। पाली, प्राकृत, मराठी, असमिया व बंगाली को इसी माह शास्त्रीय भाषा के तौर पर चि त किया है। इनमें से पाली भाषा को बुद्ध की विरासत माना जाता है। भगवान बुद्ध की शिक्षाएं व प्रमुख ग्रंथ त्रिपिटक मूल रूप से पाली भाषा में ही उपलब्ध हैं। यह भारत की प्राचीनतम ज्ञात भाषाओं में से है। जिसे ब्रा ी लिपि में लिखा जाता है। फिलवक्त रूस-यूक्रेन, इस्राइल-फिलिस्तीन जैसे मुल्कों के बीच जारी युद्ध में बेगुनाह लोग मारे जा रहे हैं, वे विस्थापन झेलने को मजबूर हैं, उनको आवास, भोजन, पीने का पानी, जरूरी दवाएं तक उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे में बुद्ध की शिक्षाओं के माध्यम से शांति का पथ-प्रशस्त करके अस्थिरता व अशांति से मुक्ति का मार्ग पाया जा सकता है। विश्व शांति के लिए बुद्ध को याद करना जख्म पर मलहम लगाने जैसा हो सकता है। इस सख्त वक्त में मोदी ने बुद्ध के ज्ञान को दोहरा कर बड़ा संदेश देने का सार्थक प्रयास किया है। हालांकि बौद्ध धर्म के दुनिया में जितने अनुयायी हैं, उस अनुपात में यदि उनकी शिक्षाओं पर तनिक भी आस्था होती तो इस अशांति से मानव यूं त्रस्त न होता।

चिंतन-मनन

भगवान का सबसे प्रिय आहार अहंकार

अहंकार शब्द बना है अहं से, जिसका अर्थ है मैं। जब व्यक्ति में यह भावना आ जाती है कि जो हूं सो मैं, मुझसे बड़ा कोई दूसरा नहीं है तभी व्यक्ति का पतन शुरू हो जाता है। द्वापर युग में सहस्त्रबाहु नाम का राजा हुआ। इसे बल का इतना अभिमान हो गया कि शिव से ही युद्ध करने पहुंच गया। भगवान शिव ने सहस्त्रबाहु से कह दिया कि तुम्हारा पतन नजदीक आ गया है। परिणाम यह हुआ कि भगवान श्री कृष्ण से एक युद्ध में सहस्त्रबाहु को पराजित होना पड़ा। रावण विद्वान होने के साथ ही महापराप्रमी था। उसे अपने बल और मायावी विद्या का अहंकार हो गया और उसने सीता का हरण कर लिया। इसका फल रावण को यह मिला कि रावण का वंश सहित सर्वनाश हो गया। अंत काल में उसका सिर भगवान राम के चरणों में पड़ा था। भगवान कहते हैं मेरा सबसे प्रिय आहार अहंकार है अर्थात अहंकारियों का सिर नीचा करना भगवान को सबसे अधिक पसंद है। अहंकारी का सिर किस प्रकार भगवान नीच करते हैं इस संदर्भ में एक कथा है कि, नदी किनारे एक सुन्दर सा फूल खिला। इसने नदी के एक पत्थर को देखकर उसकी हंसी उड़ायी कि, तुम किस प्रकार से नदी में पड़े रहते हो। नदी की धारा तुम्हें दिन रात ठोकर मारती रहती है। मुझे देखो मैं कितना सुन्दर हूं। हवाओं में झूमता रहता हूं। पत्थर फूल की बात को चुपचाप सुनता रहा। पानी में घिसकर पत्थर ने शालिग्राम का रूप ले लिया था। किसी व्यक्ति ने उसे उठाकर अपने पूजा घर में स्थापित किया और उसकी पूजा की। पूजा के समय उस व्यक्ति ने फूल को शालिग्राम के चरणों में रख दिया। फूल ने जब खुद को पत्थर के चरणों में पाया तो उसे एहसास हो गया कि उसे अपने अहंकार की सजा मिली है। पत्थर ने अब भी कुछ नहीं कहा वह फूल की मन स्थिति को देखकर मुस्कुराता रहा।

वैश्विक जलचक्र असंतुलन से जुड़ी चुनौतियां की गंभीरता

ललित गर्ग

संतुलित जलचक्र के कारण समूची दुनिया के समुख पानी एक बड़ी गंभीर एवं चुनौतीपूर्ण समस्या बन रही है। पृथ्वी के चारों ओर पानी के घूमने की प्रणाली को जल-चक्र कहा जाता है, जीवन को संचालित करने के लिए जिसका सुचारु होना आवश्यक होता है। पूरी दुनिया में पीने के पानी की भारी समस्या है और उसके अधिक विकराल होने की संभावनाओं की चेतावनी लम्बे समय से दिये जाने के बावजूद हम नहीं चेत रहे हैं। पानी के दुरुपयोग, जल संसाधनों के कुप्रबंधन, बदलते जलवायु, भूमि के बढ़ते उपयोग और वन क्षेत्रों में कटौती ने समूचे जल-चक्र को असंतुलित कर दिया है। कहते हैं कि पानी की असल अहमियत वही शख्स समझता है, जो तपते रेगिस्तान में एक बूंद पानी की खोज के लिए मीलों भटका हो। वह शख्स पानी की कीमत क्या जाने, जो नदी के किनारे रहता है। भारत के कई राज्यों में पीने के पानी की भारी समस्या है और उसके अधिक विकराल होने की संभावनाएं व्यक्त की जा रही है। नीति आयोग ने अपनी एक रिपोर्ट में अगले ही साल 21 शहरों में भूजल खत्म होने की आशंका व्यक्त करते हुए एक बार फिर चेताया है।

नीति आयोग की रिपोर्ट बड़े खतरे का संकेत दे रही है। अब जलचक्र के असंतुलित होने का असर भारत पर भी पड़ना नि ित है। इसलिये भारत में जल-समस्या जीवन-संकट बन सकती है। भारत में पुराने जमाने में तालाब, बावड़ी और नलकूप थे, तो आजादी के बाद बांध और नहरें बनाईं। वक्त के बदलने के साथ-साथ सोच भी बदली, अति भोगवाद, सुविधावाद बढ़ा तो प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति उपेक्षा भी घनघोर होती गयी। संयम का सूत्र छूट गया। आधुनिक सभ्यता की सबसे बड़ी मुश्किल यही है कि वह प्रकृति में निहित संदेश को हम सुन नहीं पा रहे हैं। जलसंकट पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां से लौटना मुश्किल हो गया है। समय-समय पर प्रकृति चेतावनियां देती है पर आधुनिकता के कोलाहल में हम बहरा गये हैं। आज देश का कोना-कोना जल समस्या से ग्रस्त है। वर्ष 2018 में कर्नाटक ने अभूतपूर्व बाढ़ देखी थी, किंतु अब 2019 में उसके 176 में से 156 तालुके सूखाग्रस्त घोषित हो चुके हैं। महाराष्ट्र, बिहार, उत्तरप्रदेश, झारखंड, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ भयंकर जल समस्या का सामना कर रहे हैं। विश्लेषकों द्वारा तृतीय विश्वयुद्ध की आशंका पानी के लिए व्यक्त की जाती रही है। निकट भविष्य में पानी का प्रयोग अस्त्र रूप में भी संभावित है। कुछ समय पहले पाकिस्तान से तनाव हो जाने पर भारत द्वारा सिंधु नदी के प्रवाह को रोक कर पानी की उपलब्धता बाधित करने की चेतावनी दी गई थी। जबकि देश में ही पानी की अनुपलब्धता की समस्या पूरे राष्ट्र में पिछले 10-15 साल से चल रही है। इसके मूल में नियमित रूप से वर्षा का न होना तथा सूखा पड़ते रहना तथा सरकार की गलत नीतियां भी हैं। पानी की उपलब्धता की स्थिति को देखते हुए यह लगने लगा है कि विश्वयुद्ध हो या न हो, पर हर गली-मोहल्ले में, शहर -शहर में, गांव- गांव में पानी के लिए 10-15 वर्ष में ही युद्ध होंगे और भाईचारे के साथ रह रहे पड़ोसी पानी के लिए आपस में लड़ेंगे।

भारत सहित दुनिया के अधिकांश देश जल-समस्या से पीड़ित है। पृथ्वी पर तीन अरब लोग पहले से जल संकट का सामना कर रहे हैं। अब जल-चक्र असंतुलन से न जाने और कितने लोग संकट में आ जाएंगे। बड़ी चिंता यह भी कि इससे दुनिया की जीडीपी को आठ से पंद्रह प्रतिशत तक नुकसान हो जाएगा। दरअसल, प्रकृति की उपेक्षा के साथ-साथ सिर्फ अपना लाभ देखने की दुष्प्रवृत्ति ही इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है। जल की बबार्दी, वन क्षेत्रों का खात्मा, पेड़-पौधों का लगातार काटना, ओजोन परत को नुकसान, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु संकट और इन सब के कारण अंततः जीव-जंतुओं के अस्तित्व पर ही आती आंच के रूप में इसके दुष्परिणाम सामने है। एक तथ्य यह भी है कि इन दुष्परिणामों की चिंता तो खूब होती रही है, लेकिन सरकारें एवं आमजन इस समस्या के प्रति उतना गंभीर नहीं है, जितनी अपेक्षा है। देश के जो क्षेत्र जल संकट की भयावह स्थिति का सामना कर रहे हैं, उन क्षेत्रों में एक घड़े पानी की कीमत व्यक्ति या मनुष्य के जीवन से अधिक है। वहां गर्मी में तो महिलाएं प्रातःकाल से ही जल की व्यवस्था में जुट जाती हैं। बदलते जलवायु परिवर्तन का आलम यह है कि देश में जहां सूखा पड़ता था, अब वहां बाढ़ आ रही है। चरम जलवायु घटनाओं का स्वरूप बदल रहा है। जल चक्र पर भी इसका असर पड़ रहा है। बीते समय में चरम घटनाओं और प्राकृतिक आपदाओं में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। इन्हीं घटनाओं से होने वाले नुकसान को कम करने और इसका मुकाबला करने के लिए मोदी सरकार ने मिशन मौसम शुरू किया है। 'मिशन मौसम' के तहत सरकार टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके मौसम की भविष्यवाणी को बेहतर बनाने का काम करेगी। हर साल चक्रवात, बाढ़, सूखा और हीटवेव जैसे जलवायु परिवर्तन से उपजी आपदाओं के चलते करीब 10,000 लोगों की मौत हो जाती है। 'मिशन मौसम' की अहमियत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि मौसम की सटीक भविष्यवाणी से इनमें से कई लोगों की जान बचाई जा सकती है। सरकार ने 'मिशन मौसम' के लिए 2,000 करोड़ रुपए का बजट रखा है। इतना ही नहीं ये सरकार को आपदा के आने से पहले तैयार होने और उसके बाद जनजीवन को जल्द से जल्द सुचारु करने में भी मदद करेगा। मिशन 'मौसम प्रबंधन' तकनीकों का पता लगाएगा और इसमें कृत्रिम रूप से बादलों को विकसित करने के लिए एक प्रयोगशाला बनाना, रडार की संख्या में 150 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि करना और नए उपग्रह, सुपर कंप्यूटर और बहुत कुछ जोड़ना शामिल है। भारतीय मौसम वैज्ञानिकों को उम्मीद है कि अगले पांच सालों में उनके पास इतनी विशेषज्ञता होगी कि वे न केवल बारिश को बढ़ा सकेंगे बल्कि कुछ क्षेत्रों में ओलों और बिजली के साथ-साथ इसे भी रोक सकेंगे। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जलचक्र के असंतुलित होने से उत्पन्न समस्याओं को लेकर भी आवाज बुलंद होती रही हैं, पर जैसे हालात बनते जा रहे हैं इन चिंताओं का असर ढाक के तीन पात जैसा ही है। इससे भी गंभीर बात यह कि जल-चक्र बिगड़ने से दुनिया का आधा खाद्य उत्पादन ही खतरे में आ गया है। तब उन देशों का क्या होगा, जो पहले से खाद्यान्न संकट को झेल रहे हैं। जाहिर है, संकट में शामिल देशों की सूची बढ़ती ही जाएगी। कहना न होगा कि अब भी नहीं संभले और विकास का वैकल्पिक रास्ता नहीं खोजा, तो भयावह स्थिति को कोई नहीं रोक सकता। जलचक्र के असंतुलन की स्थिति का आकलन कोरी कल्पना पर आधारित नहीं है। विशेषज्ञों के समूह 'ग्लोबल कमीशन ऑन द इकोनॉमिक्स ऑफ वॉटर' ने तथ्यों और परिस्थितियों के गहन वैज्ञानिक अनुसंधानों और विश्लेषणों के माध्यम से भयावह हालात की ओर आगाह किया है।

वैश्विकी: संकट के दौर में ब्रिक्स सम्मेलन

डॉ. दिलीप चौबे

रूस की मेजबानी में आयोजित होने वाला ब्रिक्स सम्मेलन कई अर्थों में ऐतिहासिक है। यदि ब्रिक्स नेताओं ने राजनीतिक सूझबूझ और साहस का परिचय दिया तो यह सम्मेलन नहीं विश्व व्यवस्था के निर्माण की शुरूआत बन सकता है। संगठन के मूल पांच सदस्य देशों के साथ इस बार विस्तारित ब्रिक्स के अन्य देश भी इसमें शिरकत करेंगे। दुनिया के अनेक देश ब्रिक्स में शामिल होना चाहते हैं। यह मौजूदा देश के लिए यह एक अवसर और चुनौती है। सामान्य सोच यह है कि जितने अधिक देश होंगे संगठन उतना ही प्रतिनिधिमूलक और प्रभावशाली होगा, लेकिन सर्वसम्मति या मतैक्य से चलने वाली संगठन में निर्णय प्रक्रिया की समस्या पैदा हो सकती है। विशेषकर ऐसे समय जब विभिन्न देशों के अलग-अलग राजनीतिक हित हैं। उदाहरण के लिए सैन्य संगठन नाटो का सदस्य देश तुर्की ब्रिक्स में शामिल होना चाहता है। रूस और चीन नाटो को यूरोप और पूर्व एशिया में चुनौती दे रहे हैं। ऐसे समय ब्रिक्स में तुर्की का शामिल होना नाटो के एक 'भेदया का जोखिम' उठाना है। पि म एशिया में ईरान और सऊदी अरब के बीच वर्चस्व की लड़ाई भी एक बड़ा सिरदर्द है। आने वाले दिनों में यदि इस्राइल ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई करता है तो इस क्षेत्र में नई लामबंदी शुरू हो जाएगी। ब्रिक्स इन देशों के परस्पर विरोधी हितों में कैसे सामंजस्य स्थापित करता है यह अन्य देशों के नेताओं की राजनीतिक सूझ-बूझ की परीक्षा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की रूस यात्रा पर भी सबकी नजर रहेगी। तीन महीने के दौरान मोदी दूसरी बार रूस यात्रा पर जा रहे हैं। इस अवधि में काफी कुछ बदल गया है। कनाडा और अमेरिका के साथ भारत के संबंधों में तनाव पैदा हुआ है। कनाडा के साथ तो टकराव की स्थिति है। वहीं खालिस्तानी आतंकवादी गुरु पतवंत सिंह पन्नू को मोहरा बनाकर अमेरिका भारत पर दबाव बना रहा है। लगता है मोदी सरकार उसके निशाने पर है। कुछ राजनीतिक समीक्षा का आ र्य व्यक्त कर रहे हैं कि आखिर अमेरिका मोदी सरकार को क्यों अस्थिर करना चाहता है जबकि यह सरकार भारत में अब तक की सबसे अधिक अमेरिकी अनुकूल सरकार है। इन समीक्षकों का यह भी मानना है कि कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के भारत विरोधी विरोधी प्रलाप के पीछे भी अमेरिका है। ट्रूडो को यह खुशफहमी है कि वह कनाडा एक बड़ा शक्तिशाली देश है। हकीकत यह है कि कनाडा हर महीने में अमेरिका का पिछलग्गू देश है। 'फाइव आईज' के अन्य देशों ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड पर भी यही बात लागू होती है। हाल के घटनाक्रम से यह भी स्पष्ट हो गया है कि जर्मनी, जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देश भी अमेरिकी कुनबे के सक्रिय सदस्य बन गए हैं। इसे यूरोप और पि म एशिया में तनाव के नये हालात बन गए हैं।

हाल में ऐसी रिपोर्ट सामने आई कि उत्तर कोरिया के दस हजार से अधिक सैनिक यूक्रेन में रूस की ओर से मोर्चा संभालने वाले हैं। यदि उत्तर कोरिया रूस की मदद करने के लिए अपने सैनिक भेज रहा है तो यह भी स्वाभाविक है कि उसे रूस की ओर से यह आश्वासन मिला होगा कि दक्षिण कोरिया और जापान से संभावित संघर्ष में उसे रूस की मदद मिलेगी। इससे पूरे इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सुरक्षा हालात खतरनाक हद तक बिगड़ जाएंगे। भारत के लिए भी यह एक चुनौती होगी कि वह क्वॉड में अपनी भूमिका पर गौर करे। कजान (रूस) में प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति पुतिन के बीच यदि शिखर वार्ता होती है तो उसे पता चलेगा कि भारत अमेरिका और रूस के साथ अपने संबंधों में कैसे संतुलन बनता है। प्रधानमंत्री मोदी के लिए चीन के साथ अपने संबंधों को पटरी पर लाने का एक अवसर है। ब्रिक्स आयोजन के समय दुनिया को किसी अनहोनी के लिए भी तैयार रहना चाहिए। संभव है कि इसी दौरान इस्राइल ईरान को निशाना बनाएं यदि ऐसा होता है तो ईरान भी जवाबी कार्रवाई करेगा। इस्राइल अपने बलबूते ईरान की चुनौती का सामना करने की स्थिति में नहीं है। ऐसे में अमेरिका सैनिक मदद के लिए संघर्ष में सीधे रूप से शामिल हो सकता है। चुनाव में लड़खड़ा रही डेमोक्रेटिक प्रत्याशी कमला हैरिस के लिए यह फायदे का सौदा हो सकता है। यह बात दूसरी बात है कि दुनिया में भारी तबाही का कारण बन सकता है?

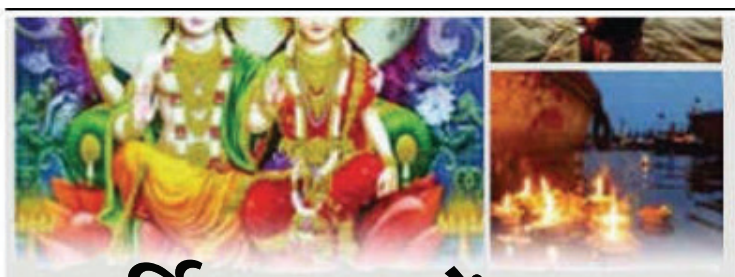

कार्तिक मास में क्या करना चाहिए और क्या करने से बचना चाहिए

कार्तिक मास चल रहा है। इस माह में विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा के साथ ही यम, धन्वंतरि, गोवर्धन, श्रीकृष्ण, चित्रगुप्त आदि की पूजा का महत्व होता है। इस माह में एक साथ समस्त देवी-देवताओं को प्रसन्न किया जा सकता है। आओ जानते हैं कि इस माह में क्या करना चाहिए और क्या नहीं जानते हैं।

पीपल पूजा : पूर्णिमा के दिन मां लक्ष्मी का पीपल के वृक्ष पर निवास रहता है। पूर्णिमा के दिन जो भी जातक मीठे जल में दूध मिलाकर पीपल के पेड़ पर चढ़ाता है उस पर मां लक्ष्मी प्रसन्न होती है।

चावल का दान : कार्तिक मास में गरीबों को चावल दान करने से चन्द्र ग्रह शुभ फल देता है।

शिवलिंग पूजा : इसी तरह इस माह शिवलिंग पर कच्चा दूध, शहद व गंगाजल मिला कर चढ़ाने से भगवान शिव प्रसन्न होते हैं।

द्वार श्रृंगार और पूजा : कार्तिक मास के प्रमुख पर्वों पर घर के मुख्यद्वार पर आम के पत्तों का तोरण बांधें।

उपहार : इस माह पत्नी या किसी नन्ही बच्ची को उपहार दें।

रंगोली : कार्तिक मास में माह भर द्वार पर रंगोली जरूर बनाएं। इससे विशेष समृद्धि के योग बनते हैं। नवग्रह प्रसन्न होते हैं।

ये कार्य न करें

- शादीशुदा व्यक्ति कार्तिक मास में शारीरिक संबंध न बनाएं वरना चन्द्रमा के दुष्प्रभाव आपको व्यथित करेंगे।
- इस माह में मांसाहार, शराब और मछली आदि तामसिक भोजन नहीं करना चाहिए।
- इस माह में बैंगन, दही, करेला और जीरा नहीं खाना चाहिए। मूली खाना फायदेमंद होगा।
- दलहन (दालों) खाना निषेध- कार्तिक महीने में द्विदलन अर्थात उड़द, मूंग, मसूर, चना, मटर, राई आदि नहीं खाना चाहिए।

घर लाएं मिट्टी की ये खास वस्तुएं

चमक जाएगी किस्मत, घर लाएं मिट्टी ना सिर्फ मन को सुवासित करती है बल्कि इसके बर्तन, खिलौने और सामग्री अगर घर में लाकर रखी जाए तो जिंदगी भी महक सकती है। मिट्टी से बनी चीजें सुख, सौभाग्य और समृद्धि की कारक होती हैं। मिट्टी का उपयोग हमारे जीवन को भाग्यशाली बना सकता है।

- हर व्यक्ति को मिट्टी या भूमि तत्व के पास ही रहना चाहिए।
- वास्तुशास्त्र के अंतर्गत भी मिट्टी को महत्वपूर्ण कहा गया है। मिट्टी के घड़े से पानी पीना या घर में मिट्टी के बर्तन रखना अत्यंत लाभदायक माना गया है।
- ऐसा करने से आसपास सकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव बना रहता है। लेकिन ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मिट्टी के कुछ बर्तन ऐसे हैं जो हर घर में होने ही चाहिए। जो लोग चाहते हैं कि उनके जीवन में सुख-समृद्धि और सफलता हमेशा बरकरार रहे उन लोगों को कुछ विशेष प्रकार के मिट्टी के बर्तन अपने घर में रखने चाहिए।
- मिट्टी के इन उपयोगी बर्तनों में सबसे पहला नाम है घड़े का।
- बहुत से परिवारों में घड़े का पानी पिया जाता है, घड़े का पानी पीने से बुध और चंद्रमा का प्रभाव शुभ होता है।
- यहां तक कि विज्ञान भी यह मानता है कि घड़े का पानी सेहत के लिए अत्यंत लाभकारी होता है।
- अगर आपके घर में घड़ा हैं तो इसे अपने घर की उत्तर-पूर्वी दिशा में ही रखें। यह आपके घर और आसपास के वातावरण की सभी नकारात्मक ऊर्जा को समाप्त करता है।
- परिवार में सुख और समृद्धि के मार्ग भी खुल जाते हैं।
- घर में कोई व्यक्ति तनाव ग्रस्त हैं या मानसिक रूप से परेशान है तो आप उन्हें माटी के घड़े से किसी भी पौधे को पानी देने के लिए कहें।
- लस्सी और चाय कुल्हड़ में पीने का मजा ही कुछ और है, लेकिन मिट्टी से बने ये गिलास मंगल ग्रह के दुष्प्रभाव से भी मुक्ति दिलवाते हैं।
- इसलिए जो लोग मंगल के कोप से प्रभावित है, उन्हें कोई भी पेय पदार्थ कुल्हड़ में ही पीने चाहिए।
- हर शनिवार के दिन किसी कुल्हड़ में पानी भरकर पीपल के पेड़ के नीचे रखने से करियर में लाभ मिलेगा।
- कुल्हड़ में पानी भरकर अपनी छत पर भी प्यासे पक्षियों के लिए रख सकते हैं, इससे अगर आप नौकरी की तलाश कर रहे हैं तो आपकी तलाश जल्द पूरी होगी।
- मिट्टी से बनी भगवान की मूर्ति को घर में रखने से भी आपकी धन संबंधी परेशानियां तो दूर होती ही हैं, साथ ही धन की स्थिरता भी बनी रहती है।
- जो लोग धन संबंधी परेशानियां झेल रहे हैं उन्हें हर शनिवार मिट्टी का दीया पीपल के पेड़ के नीचे जलाना चाहिए।
- अगर किसी व्यक्ति के दांपत्य जीवन में परेशानियां चल रही हैं तो उसे नियमित तौर पर तुलसी के पौधे पर मिट्टी का दीया जलाना चाहिए।
- नि:संतान स्त्री या पुरुष को चार मुंह वाले दीये में चार लौ लगाकर श्रीकृष्ण की मूर्ति के आगे प्रज्वलित करना चाहिए।
- मिट्टी से बनी विभिन्न वस्तुओं या खिलौनों का ड्राइंग रूम में प्रयोग करने से धन की आवक बढ़ती है।

इन पुष्पों से करें श्री हरि का पूजन

कार्तिक मास चल रहा है। इस माह की समाप्ति कार्तिक पूर्णिमा के दिन यानी को होगी। इस महीने में विशेष तौर पर भगवान श्री विष्णु का पूजन करने की मान्यता है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार कार्तिक माह भगवान श्रीहरि का महीना माना गया है। मान्यतानुसार जो भक्त कार्तिक मासपर्यंत निम्न पुष्पों से भगवान श्री हरि विष्णु का पूजन करते हैं, उनके जन्म-जन्मांतर के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है। इतना ही नहीं देवउठनी एकादशी या हरि प्रबोधिनी एकादशी के दिन तो अवश्य ही इन पुष्पों से श्री नारायण का पूजन करना चाहिए। इन पुष्पों के साथ ही तुलसी दल से पूरे कार्तिक मास में विष्णु पूजन करने से मनुष्य को सभी तरह के सुख और चारों दिशाओं से समृद्धि की प्राप्ति होती है।

जानिए किन पुष्पों से करें विष्णु पूजन

- कार्तिक मास में जो मनुष्य तुलसी से भगवान का पूजन करते हैं, उनके 10,000 जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।
- जो मनुष्य वकुल और अशोक के फूलों से भगवान विष्णु का पूजन करते हैं, वे सूर्य-चंद्रमा रहने तक किसी प्रकार का शोक नहीं पाते।
- जो मनुष्य अगस्त्य के पुष्प से भगवान विष्णु का पूजन करते हैं, उनके आगे इंद्र भी हाथ जोड़ता है। तपस्या करके संतुष्ट होने पर हरि भगवान जो नहीं करते, वह अगस्त्य के पुष्पों से भगवान को अलंकृत करते हैं।
- कार्तिक मास में तुलसी दर्शन करने, स्पर्श करने, कथा कहने, नमस्कार करने, स्तुति करने, तुलसी रोपण, जल से सींचने और प्रतिदिन पूजन-सेवा आदि करने से हजार करोड़ युगपर्यंत विष्णुलोक में निवास करते हैं।
- जो मनुष्य तुलसी का पौधा लगाते हैं, उनके कुटुम्ब से उत्पन्न होने वाले प्रलयकाल तक विष्णुलोक में निवास करते हैं।
- जो मनुष्य कार्तिक मास में तुलसी का रोपण करता है और रोपी गई तुलसी जितनी जड़ों का विस्तार करती है उतने ही हजार युगपर्यंत तुलसी रोपण करने वाले सुकृत का विस्तार होता है।
- जिस किसी मनुष्य द्वारा रोपी गई तुलसी से जितनी शाखा, प्रशाखा, बीज और फल पृथ्वी में बढ़ते हैं, उसके उतने ही कुल जो बीत गए हैं और होंगे, वे 2,000 कल्प तक विष्णुलोक में निवास करते हैं।
- जो मनुष्य कदम्ब के पुष्पों से श्रीहरि का पूजन करते हैं, वे कभी भी यमराज को नहीं देखते।
- जो भक्त गुलाब के पुष्पों से भगवान विष्णु का पूजन करते हैं, उन्हें मुक्ति मिलती है।
- जो मनुष्य सफेद या लाल कनेर के फूलों से भगवान का पूजन करते हैं, उन पर भगवान अत्यंत प्रसन्न होते हैं।
- जो मनुष्य भगवान विष्णु पर आम की मंजरी चढ़ाते हैं, वे करोड़ों गायों के दान का फल पाते हैं।
- जो मनुष्य दूब के अंकुरों से भगवान की पूजा करते हैं, वे 100 गुना पूजा का फल ग्रहण करते हैं।
- जो मनुष्य विष्णु भगवान को चंपा के फूलों से पूजते हैं, वे फिर संसार में नहीं आते।
- पीले रक्त वर्ण के कमल पुष्पों से भगवान का पूजन करने वाले को श्वेत द्वीप में स्थान मिलता है।
- जो भक्त विष्णुजी को केतकी के पुष्प चढ़ाते हैं, उनके करोड़ों जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं।
- जो मनुष्य शमी के पत्र से भगवान की पूजा करते हैं, उनको महाघोर यमराज के मार्ग का भय नहीं रहता।
- कार्तिक मास में जो मनुष्य बिल्व पत्र से भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, वे मुक्ति को प्राप्त होते हैं।

कार्तिक मास में बरसेंगे भगवान विष्णु के आशीर्वाद, जानें तुलसी पूजा के लाभ

कार्तिक माह भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी का महीना है। इस महीने में दोनों की पूजा के साथ ही तुलसी पूजा का खास महत्व होता है। माता लक्ष्मी और तुलसी की पूजा करने से भगवान विष्णु का आशीर्वाद प्राप्त होता है। इस माह की देवउठनी ग्यारस एकादशी पर तुलसी करने का खासा महत्व है।

महाप्रसाद जननी, सर्व सौभाग्यवर्धिनी
आधि व्याधि हरा नित्यं,
तुलसी त्वं नमोस्तुते।।

- भगवान विष्णु को तुलसीजी बहुत ही प्रिय हैं। कार्तिक मास में तुलसीजी का पूजा करने से विशेष पुण्य लाभ मिलता है और जीवन से सारे दुख-संकट दूर हो जाते हैं।
- शालिग्राम के साथ तुलसीजी की पूजा ऐसा करने से अकाल मृत्यु नहीं होती है।
- कार्तिक मास में तुलसीजी की पूजा करके इसके पौधे का दान करना श्रेष्ठ माना गया है।
- कार्तिक माह में तुलसी के पौधे को हर गुरुवार को कच्चे दूध से सींचना चाहिए। इससे माता तुलसी प्रसन्न होकर आशीर्वाद देती हैं।
- कार्तिक महीने में प्रतिदिन शाम को तुलसी के पौधे के सामने दीपक जलाकर रखना चाहिए। इसे पुण्य की प्राप्ति होती है और घर में सुख शांति बनी रहती है।
- कार्तिक में ब्रह्म मुहूर्त में उठकर तुलसी को जल चढ़ाने से सभी पापों से मुक्ति मिलती है।
- तुलसी की पूजा और इसके सेवन से हर तरके रोग और शोक मिट जाते हैं और सौभाग्य में वृद्धि होती है।

घर की उत्तर ईशान की दीवारों का रंग ऐसा रखें

रंगों का हमारे जीवन में बहुत बहुत असर होता है। वास्तु के अनुसार ही घर के पर्दे, चादर, कपड़े और दीवारों तक का रंग होना चाहिए। यदि आप इसका ध्यान रखते हैं तो आने वाली बहुत-सी परेशानियों से बच जाएंगे। वास्तु के अनुसार घर की उत्तर और ईशान दिशा महत्वपूर्ण होती है।

उत्तर की दीवार

- घर का उत्तर का भाग जल तत्व प्रधान होता है। इसे धन और लक्ष्मी का स्थान भी कहा जाता है अत: इस स्थान को स्वच्छ, पवित्र और खाली रखना चाहिए।
- वास्तु के अनुसार इसकी साज-सजा में हल्के हरे रंग या पिस्ता हरे रंग का प्रयोग किया जाना चाहिए। हालांकि आप आसमानी रंग का प्रयोग भी कर सकते हैं। आर्थिक स्थिति में सुधार होता है।
- यदि यहां अन्य किसी भी प्रकार के गहरे रंगों का प्रयोग किया तो आर्थिक हानि तो होगी ही, साथ ही अन्य परेशानियां भी खड़ी हो सकती हैं। यह दिशा हवा से जुड़ी है।

उत्तर-पूर्व अर्थात ईशान की दीवार

- उत्तर-पूर्व को ईशान कोण कहते हैं। इस दिशा में देवता निवास करते हैं। यह भगवान शिव की दिशा भी मानी जाती है। इस दिशा में आकाश ज्यादा खुला होता है।
- इस दिशा की दीवार का रंग आसमानी, सफेद या हल्के बैंगनी रंग का होना चाहिए। हालांकि इसमें पीले रंग का प्रयोग इसलिए करना चाहिए, क्योंकि यह देवी और देवताओं का स्थान होता है।

आखिर ऋषियों की संख्या 7 ही क्यों हैं? जानिए हर काल के 7 ऋषि कौन हैं

भारतीय ऋषियों और मुनियों ने ही इस धरती पर धर्म, समाज, नगर, ज्ञान, विज्ञान, खगोल, ज्योतिष, वास्तु, योग आदि ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया था। दुनिया के सभी धर्म और विज्ञान के हर क्षेत्र को भारतीय ऋषियों का ऋणी होना चाहिए। उनके योगदान को याद किया जाना चाहिए। उन्होंने मानव मात्र के लिए ही नहीं, बल्कि पशु-पक्षी, समुद्र, नदी, पहाड़ और वृक्षों सभी के बारे में सोचा और सभी के सुरक्षित जीवन के लिए कार्य किया।

।।सप्त ब्रह्मर्षि, देवर्षि, महर्षि, परमर्षय:।
कण्डर्षिश्च, श्रुतर्षिश्च, राजर्षिश्च क्रमावश:।।

अर्थात - 1. ब्रह्मर्षि, 2. देवर्षि, 3. महर्षि, 4. परमर्षि, 5. काण्डर्षि, 6. श्रुतर्षि और 7. राजर्षि- ये 7 प्रकार के ऋषि होते हैं इसलिए इन्हें सप्तर्षि कहते हैं।

सप्तऋषि तारा मंडल

आकाश में 7 तारों का एक मंडल नजर आता है। उन्हें सप्तर्षियों का मंडल कहा जाता है। इसके अतिरिक्त सप्तर्षि से उन 7 तारों का बोध होता है, जो ध्रुव तारे की परिक्रमा करते हैं। उक्त मंडल के तारों के नाम भारत के महान 7 संतों के आधार पर ही रखे गए हैं। वेदों में उक्त मंडल की स्थिति, गति, दूरी और विस्तार की विस्तृत चर्चा मिलती है।

भारत में ऋषियों और गुरु-शिष्य की लंबी परंपरा रही है। ब्रह्मा के पुत्र भी ऋषि थे तो भगवान शिव के शिष्यगण भी ऋषि ही थे। प्रथम मनु स्वायंभुव मनु से लेकर बौद्धकाल तक ऋषि परंपरा के बारे में जानकारी मिलती है। हिन्दू पुराणों ने काल को मन्वंतरों में विभाजित कर प्रत्येक मन्वंतर में हुए ऋषियों के ज्ञान और उनके योगदान को परिभाषित किया है। प्रत्येक मन्वंतर में प्रमुख रूप से 7 प्रमुख ऋषि हुए हैं। विष्णु पुराण के अनुसार इनकी नामावली इस प्रकार है-

- प्रथम स्वायंभुव मन्वंतर में- मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वशिष्ठ।
- द्वितीय स्वारोचिष मन्वंतर में- ऊर्ज्ज, स्तम्भ, वात, प्राण, पृषभ, निरय और परीवान।
- तृतीय उत्तम मन्वंतर में- महर्षि वशिष्ठ के सातों पुत्र।
- चतुर्थ तामस मन्वंतर में- ज्योतिर्धामा, पृथु, काव्य, चैत्र, अग्नि, वनक और पीवर।
- पंचम रैवत मन्वंतर में- हिरण्यरोमा, वेदश्री, ऊर्ध्वबाहु, वेदबाहु, सुधामा, पर्जन्य और महामुनि।
- षष्ठ चाक्षुष मन्वंतर में- सुमेधा, विरजा, हविष्मान, उतम, मधु, अतिनामा और सहिष्णु।
- वर्तमान सप्तम वैवस्वत मन्वंतर में- कश्यप, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और भारद्वाज।

भविष्य में

- अष्टम सावर्णिक मन्वंतर में- गालव, दीप्तिमान, परशुराम, अश्वत्थामा, कृप, ऋष्यश्रृंग और व्यास।
- नवम दक्षसावर्णि मन्वंतर में- मेधातिथि, वसु, सत्य, ज्योतिष्मान, द्युतिमान, सबन और भव्य।
- दशम ब्रह्मसावर्णि मन्वंतर में- तपोमूर्ति, हविष्मान, सुकृत, सत्य, नाभाग, अप्रतिमौजा और सत्यकेतु।
- एकादश धर्मसावर्णि मन्वंतर में- वपुष्मान, घृणि, आरुणि, नि:स्वर, हविष्मान, अनघ और अग्नितेजा।
- द्वादश रुद्रसावर्णि मन्वंतर में- तपोद्युति, तपस्वी, सुतपा, तपोमूर्ति, तपोनिधि, तपोरति और तपोधृति।
- त्रयोदश देवसावर्णि मन्वंतर में- धृतिमान, अव्यय, तत्वदर्शी, निरुत्सुक, निर्मोह, सुतपा और निष्प्रकम्प।
- चतुर्दश इन्द्रसावर्णि मन्वंतर में- अग्नीध्र, अग्नि, बाहु, शुचि, युक्त, मागध, शुक्र और अजित।
- इन ऋषियों में से कुछ कल्पान्त-चिरजीवी, मुक्तात्मा और दिव्यदेहधारी हैं।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार

1. गौतम, 2. भारद्वाज, 3. विश्वामित्र, 4. जमदग्नि 5. वसिष्ठ, 6. कश्यप और 7. अत्रि।

महाभारत के अनुसार

1. मरीचि, 2 . अत्रि, 3. अंगिरा, 4. पुलह, 5. क्रतु, 6. पुलस्त्य और 7. वसिष्ठ सप्तर्षि माने गए हैं।

- महाभारत में राजधर्म और धर्म के प्राचीन आचार्यों के नाम इस प्रकार हैं- बृहस्पति, विशालाक्ष (शिव), शुक्र, सहस्राक्ष, महेन्द्र, प्राचेतस मनु, भरद्वाज और गौरशिरस मुनि।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इनकी सूची इस प्रकार है- मनु, बृहस्पति, उशनस (शुक्र), भरद्वाज, विशालाक्ष (शिव), पराशर, पिशुन, कौणपदंत, वातव्याधि और बहुदंती पुत्र।
- वैवस्वत मन्वंतर में वशिष्ठ ऋषि हुए। उस मन्वंतर में उन्हें ब्रह्मर्षि की उपाधि मिली। वशिष्ठजी ने गृहस्थाश्रम की पालना करते हुए ब्रह्माजी के मार्गदर्शन में उन्होंने सृष्टि वर्धन, रक्षा, यज्ञ आदि से संसार को दिशाबोध दिया।

संक्षिप्त समाचार

पानी में डूबी प्रवासियों से भरी नाव, बाल-बाल बचे 65 यात्री

पेरिस, एजेंसी। फ्रांस के तट पर प्रवासियों से खचाखच भरी एक नाव डूब गई, जिससे एक बच्चे की मौत हो गई। इस हादसे में अब तक 65 यात्रियों को सुरक्षित बचा लिया गया है और एजेंसियां मामले की जांच कर रही हैं। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि नाव पर यात्रियों की संख्या अधिक थी, जिसके कारण अधिक वजन होने से यह हादसा हुआ। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, हादसे के बाद घटनास्थल पर अफरा-तफरी का माहौल था। यात्री चीख-पुकार करते हुए अपनी जान बचाने के लिए पानी में इधर-उधर भागे। नाव पर मौजूद लोगों ने एक-दूसरे की मदद की, जब स्थानीय सुरक्षा एजेंसियों को इस घटना की सूचना मिली, तो उन्होंने तुरंत बचाव दल को मौके पर भेजा। बचाव दल ने 65 यात्रियों को सुरक्षित दूसरी नाव पर शिफ्ट कर दिया, जिससे उनकी जान बच गई। स्थानीय नौसेना के अनुसार, इस हादसे में एक बच्चा बेहोश मिला। डॉक्टरों ने उसकी जांच की और उसे मृत घोषित कर दिया। डॉक्टरों का मानना है कि बच्चे की मौत दम घुटने और सदमे के कारण हुई है। उसके परिजनों से पूछताछ की जा रही है और शव को पोस्टमार्टम के लिए सुरक्षित रख लिया गया है। फ्रांसीसी समुद्री अधिकारियों ने शुक्रवार को बताया कि गुरुवार रात फ्रांस के तट के पास चैनल में ब्रिटेन जा रही प्रवासियों से भरी एक नाव डूब गई। इस घटना का कारण नाव का अधिक वजन बताया जा रहा है। इस वर्ष फ्रांस में समुद्र में डूबने से करीब 52 प्रवासियों की मौत हो चुकी है। इससे पहले 3 सितंबर को 12 बच्चों की भी इसी तरह से डूबने से मौत हुई थी। कई प्रवासी गैर-कानूनी तरीके से फ्रांस में घुसने का प्रयास करते हैं। स्थानीय जांच एजेंसियां समुद्र में गश्त लगा रही हैं ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

खाई में गिरी जापानी पर्यटकों से भरी बस, 22 लोग घायल

अंकारा, एजेंसी। तुर्किये में एक दुखद घटना में जापानी पर्यटकों को ले जा रही एक बस बृहस्पतिवार को सड़क से फिसलकर खाई में गिर गई, जिससे उसमें सवार 22 लोग घायल हो गए। यह दुर्घटना अंकारा से लगभग 250 किलोमीटर दक्षिण-पश्चिम में अफ्योनकाराहिसर प्रांत के एक राजमार्ग पर हुई। दुर्घटना का कारण अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है। घायलों को अफ्योनकाराहिसर के अस्पतालों में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी चिकित्सा की जा रही है। इनमें से एक यात्री की हालत गंभीर बताई गई है। अधिकारियों ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

ब्रिटेन के विदेश मंत्री लैमी की चीन को सलाह- रूसी सेना को स्पोर्ट करे बंद, यूक्रेन के खिलाफ युद्ध से रहे दूर

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन के विदेश मंत्री ने चीन द्वारा यूक्रेन के खिलाफ युद्ध में रूस को दिए जा रहे समर्थन पर शुक्रवार को चिंता जताई और अपने चीनी समकक्ष से आग्रह किया कि वह अपने देश की कंपनियों को रूसी सेना को उपकरणों की आपूर्ति करने से रोकें। ब्रिटेन के विदेश मंत्री डैविड लैमी ने बीजिंग में चीन के विदेश मंत्री वांग यी के साथ शुक्रवार को बैठक की थी। डेविड लैमी ब्रिटेन में जुलाई में 'लेबर पार्टी के सत्ता में आने के बाद चीन की यात्रा करने वाले पहले कैबिनेट मंत्री हैं। उन्होंने चीन के उप प्रधानमंत्री डिंग श्वेशियांग से शुक्रवार को मुलाकात की तथा उसी दिन बाद में विदेश मंत्री वांग यी से भी बातचीत की। ब्रिटेन के विदेश मंत्री बीजिंग के साथ संबंधों को सुधारने के प्रयासों के तहत चीन की दो दिवसीय यात्रा पर हैं। दरअसल, जासूसी के आरोपों, यूक्रेन के खिलाफ युद्ध में रूस का समर्थन करने और हांगकांग में आम नागरिकों की स्वतंत्रता का दमन के मुद्दे पर दोनों देशों के संबंधों में खटास पैदा हो गई है। अधिकारियों ने बताया कि ब्रिटेन की सरकार ने इस बात पर जोर दिया कि चीन के साथ संबंध ''व्यावहारिक और आवश्यक हैं।

इराकी मिलिशिया समर्थकों का सऊदी चैनल एमबीसी के कार्यालय पर हमला, जमकर की तोड़फोड़ और आगजनी

रियाद, एजेंसी। ईरान समर्थित इराकी मिलिशिया समूह के समर्थकों ने सऊदी अरब के एमबीसी चैनल के कार्यालय पर हमला किया। यह हमला तब हुआ जब चैनल के एक कार्यक्रम में एक मिलिशिया कमांडर को आतंकवादी कहकर संबोधित किया गया। इस टिप्पणी से नाराज होकर इराक में इस मिलिशिया के सैकड़ों समर्थकों ने एमबीसी के दफ्तर पर धावा बोल दिया।शनिवार की सुबह लगभग 400 से 500 लोगों का एक बड़ा समूह बगदाद में स्थित एमबीसी के दफ्तर में घुस आया। उन्होंने दफ्तर के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और कंप्यूटर तोड़ दिए और कार्यालय के एक हिस्से में आग भी लगा दी। एक अनाम सुरक्षा अधिकारी ने एजेंस फ्रांस-प्रेस को बताया कि कार्यालय में लगी आग को तुरंत बुझा दिया गया। यह हमला इसलिए हुआ क्योंकि एमबीसी चैनल ने एक कार्यक्रम के दौरान इराकी मिलिशिया के कमांडर को आतंकवादी कहा था। इस कमांडर का संबंध ईरान समर्थित इराकी मिलिशिया से था, जो कि इराक में एक प्रभावशाली समूह है। इस बयान को मिलिशिया समर्थकों ने अपमानजनक माना और इसके विरोध में दफ्तर पर हमला कर दिया।यह हमला इराक और सऊदी अरब के बीच पहले से ही तनावपूर्ण संबंधों को और बढ़ा सकता है। सऊदी एमबीसी नेटवर्क पर पहले भी कई बार आरोप लगे हैं कि वे ईरान समर्थित समूहों के खिलाफ कार्यक्रम प्रसारित करते हैं, जिससे इस तरह के गुस्से का माहौल पैदा होता है।

कौन था इजराइल पर सात अक्टूबर, 2023 को हुए हमले के मास्टरमाइंड याह्या सिनवार, हमास का अगला नेता कौन ?

येरूशलम, एजेंसी। इजराइल पर सात अक्टूबर, 2023 को हुए हमले के मास्टरमाइंड याह्या सिनवार को मार गिराया गया है. इजराइल ने इसकी पुष्टि भी कर दी है. याह्या सिनवार हमास का सबसे खूंखार नेता माना जाता था. उसे खान यूनिस का कसाई भी कहा जाता था. सात अक्टूबर के हमले में 1200 लोग मारे गए थे, जबकि 251 लोगों का अपहरण कर लिया गया था. इस हमले के बाद इजराइल के सैनिकों ने याह्या सिनवार को जिम्मेदार ठहराया था. उनका कहना था कि इसने ही साजिश रचकर इजराइलियों की हत्या की, इसलिए उसकी मौत तय है, उसे खत्म किया जाएगा. इजराइल मानता है कि याह्या सिनवार के साथ-साथ इस हमले में मुहम्मद दैफ भी शामिल था. दैफ हमास की सैन्य शाखा में शामिल था. इजराइल का दावा है कि दैफ भी मारा गया. हालांकि, इसकी पुष्टि नहीं की गई है.

कौन था याह्या सिनवार : याह्या सिनवार को हमास में दूसरे नंबर का नेता माना जाता था. पहले नंबर पर इस्माइल हनिया था. हनिया पहले ही मारा जा चुका है. इजराइली सैनिकों ने जुलाई में उसे मार गिराया था. इजराइल ने जो जानकारी दी है, उसके अनुसार सात अक्टूबर की घटना के बाद सिनवार लगातार अंडर ग्राउंड रह रहा था. इजराइल के अनुसार वह किसी से भी बात नहीं करता था, क्योंकि उसे उसके लोकेशन को लेकर पकड़े जाने का भय था.

कैंप में हुआ था याह्या सिनवार का जन्म : याह्या सिनवार को पहले अबु इब्राहिम के नाम से जाना जाता था. वह दक्षिणी गाजा पट्टी का रहने वाला था. उसका जन्म गाजा के खान यूनिस के एक शरणार्थी शिविर में हुआ था. 1948 में याह्या के माता-पिता शरणार्थी बन गए थे. उसे पुश्तैनी इलाके से निकाल दिया गया था. 1948 में इजराइल ने फिलस्तीनी इलाके पर हमला किया था. इस हमले की वजह से हजारों फिलिस्तीनी शरणार्थी बन गए थे और उन्हीं में याह्या का परिवार भी शामिल था.

इस्लामिक कॉलेज से ली डिग्री : सिनवार ने खान यूनिस में ही स्कूल की पढ़ाई की. गाजा के एक इस्लामिक कॉलेज से स्नातक किया. बीबीसी की एक रिपोर्ट के मुताबिक खान यूनिस में ही याह्या का संपर्क मुस्लिम ब्रदरहुड से हुआ. दरअसल, जिस कैंप में याह्या रहता था, उसी कैंप में मुस्लिम ब्रदरहुड के समर्थक भी रहा करते थे. ऐसा कहा जाता है कि याह्या का व्यवहार तभी से हिंसक हो गया था. हमास के संस्थापक का बन गया चहेता रिपोर्ट के अनुसार 1982 में उसकी पहली बार गिरफ्तारी की गई थी. उस पर इस्लामी गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगा था और इजराइली सैनिकों ने गिरफ्तारी की थी. जेल से छूटने के बाद वह हमास के संस्थापक शेख अहमद यासीन का चहेता बन गया. हमास की स्थापना 1987 में की गई थी.

याह्या ने हमास के लिए सैन्य दल का किया गठन : याह्या सिनवार ने 1989 में हमास के लिए एक सैन्य दल का गठन किया. इसका नाम अल मज्द रखा गया था. शुरू में इसका काम अपराध करने वालों को सजा देना होता था. बाद में वह हमास का लड़ाकू विंग बन गया.

क्रूरता की वजह से उसे खान यूनिस का कसाई कहा जाता था : बीबीसी की रिपोर्ट में बताया गया है कि याह्या बहुत ही खूंखार था. उसकी छवि कट्टर थी. उसे यदि किसी पर शक होता था कि वह इजाराइल से मिला हुआ है, तो वह उसकी हत्या कर देता था. उसके आसपास का कोई भी आदमी उससे पंगा लेना नहीं चाहता था. यहां तक कि शक होने पर वह अपने आदमियों को भी मार देता था. इसी कारण से सिनवार को खान यूनिस का कसाई भी कहा जाता था.

23 साल तक लगातार जेल में बंद रहा याह्या सिनवार : 1988 में इजराइल ने याह्या को फिर गिरफ्तार किया. 1988 से लेकर 2011 तक वह जेल में बंद रहा. इस दौरान भी उसकी अकड़ बनी रही. मीडिया रिपोर्ट में बताया गया है कि जेल में वह एक तरह से नेता बन गया था और पुलिस के साथ कैदियों की ओर से वह खुद बात करता था. याह्या अरबी के साथ-साथ हिब्रू भी बोलता था.

इजराइली सैनिक के बदले याह्या को जले से किया गया रिहा : इजराइल ने 2011 में अपने सैनिक गिलाड शलिट के बदले याह्या सिनवार समेत 1027 फिलिस्तीनियों को छोड़ा था. शलिट खुद पांच साल तक हमास के हाथों बंधक रहा था. ऐसा कहा जाता है कि उसकी गिरफ्तारी में याह्या के करीबी का हाथ था. गाजा के चुनाव में हमास को जीत हासिल हुई. हमास ने यासिर अराफात की पार्टी अल-फतह का लगभग सफाया कर दिया. उनके नेताओं को भी मार दिया. याह्या ने अन्य कई संगठनों से समझौता करके अपना गुट बड़ा कर लिया था. 2013 में याह्या को गाजा पट्टी में पॉलिटिकल ब्यूरो का सदस्य नियुक्त किया गया था. 2017 में वह इस ब्यूरो का प्रमुख बन गया. 2015 मे अमेरिका ने याह्या को विशेष नामांकित वैश्विक आतंकवादी घोषित किया था. इजराइली सेना के प्रवक्ता कर्नल रिचर्ड हेख्त ने याह्या को शैतान का चेहरा कहा था. अब हमास का अगला नेता कौन होगा, इस पर संगठन में विचार विमर्श जारी है. कुछ नामों पर विचार किया जा रहा है. इनमें से महमूद अल जहर, मौसा अबु मार्जुक, मोहम्मद सिनवार और खलीफ अल हया के नाम सामने आ रहे हैं।

पाकिस्तान में कॉलेज में रेप के खिलाफ सड़कों पर छात्र, स्कूल कॉलेज बंद

रावलपिंडी, एजेंसी। पाकिस्तान के पंजाब में छात्रों के विरोध प्रदर्शन के बीच सभी स्कूल-कॉलेज को बंद करने का आदेश दिया गया है। पंजाब कॉलेज फॉर वीमेन के कैंपस में एक छात्रा से रेप के आरोपों के बाद पाकिस्तान में छात्र आंदोलन भड़का है। पंजाब पाकिस्तान का सबसे ज्यादा आबादी वाला क्षेत्र है।

अब पंजाब प्रांत के गृह विभाग ने शुक्रवार और शनिवार को लोगों के इकट्ठा होने पर भी प्रतिबंध लगा दिया है। स्कूल कॉलेज बंद होने से पंजाब प्रांत में लगभग 2.6 करोड़ बच्चों और कॉलेज छात्रों की पढ़ाई पर असर पड़ेगा। रावलपिंडी पुलिस का कहना है कि गुरुवार को शहर में हुए विरोध प्रदर्शनों के दौरान तोड़फोड़ और आगजनी के आरोप में 380 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस सोशल मीडिया पर उपलब्ध फोटो/वीडियो से आगजनी करने वाले छात्रों की पहचान करेगी। छात्रों का प्रदर्शन अब लाहौर के अलग-अलग कॉलेजों से लेकर रावलपिंडी जैसे शहरों तक फैल गए हैं। रावलपिंडी में हो रहे प्रदर्शन पर पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े और लाठीचार्ज भी किया। सोशल मीडिया पोस्ट वायरल होने पर भड़के छात्र पुलिस ने गार्ड को गिरफ्तार पिछले सप्ताह सोशल मीडिया पर एक पोस्ट वायरल होने के बाद छात्रों का विरोध प्रदर्शन शुरू हुआ था। वायरल पोस्ट में खबर थी कि पंजाब कॉलेज फॉर वीमेन के कैंपस में एक छात्रा के साथ रेप हुआ है। पुलिस ने इस सोशल मीडिया पोस्ट में दिखे एक सुरक्षा गार्ड को गिरफ्तार भी किया था। लेकिन अब तक कोई पीड़िता सामने नहीं आई है और पुलिस आरोपों की पुष्टि नहीं कर सकी है। मामले पर पंजाब ग्रुप ऑफ कॉलेज के लाहौर निदेशक आरिफ चौधरी का कहना है कि यदि ये घटना सच साबित होती है, तो मैं इस्तीफा दे दूंगा और छात्रों के साथ खड़ा हो जाऊंगा। वहीं पंजाब प्रांत की मुख्यमंत्री मरियम नवाज शरीफ ने कहा है कि जो लोग सोशल मीडिया पर झूठी खबर फैला रहे हैं।

विदेशी महिला इंफ्लूएंसर को पाकिस्तान में नहीं दिखी लड़कियां !

इस्लामाबाद , एजेंसी। पाकिस्तान का वायरल वीडियो- पाकिस्तान की राजधानी इस्लामाबाद पहुंची एक विदेशी महिला इंफ्लूएंसर का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वीडियो में वह एयरपोर्ट और शहर की सड़कों का दृश्य दिखाते हुए हैरानी जताती हैं कि वहां कोई महिला नजर नहीं आ रही है। इस सवाल ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया है, और इस पर कई तरह की प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं।यह वीडियो इस्लामाबाद एयरपोर्ट से शुरू होता है, जहां इंफ्लूएंसर और उनकी एक दोस्त फोन के कैमरे से एयरपोर्ट की भीड़ को दिखाती हैं। एयरपोर्ट की इस भीड़ में न कोई महिला नजर आती है और न ही कोई महिला कर्मचारी दिखाई देती है। इसके बाद इंफ्लूएंसर गाड़ी में बैठकर शहर की सड़कों पर घूमने निकलती हैं। जब वह इस्लामाबाद की सड़कों पर आती हैं, तो वहां भी उन्हें एक भी महिला नहीं दिखती। दुकानों, सार्वजनिक स्थानों, और सड़कों पर पुरुषों का जमावड़ा नजर आता है, लेकिन महिलाओं की कोई उपस्थिति नहीं होती। इंफ्लूएंसर इस दौरान अपने वीडियो में बार-बार कहती हैं, यहां की सारी लड़कियां कहां हैं? यह सवाल वीडियो का मुख्य आकर्षण बन गया है। इस वीडियो को अब तक 1 करोड़ से ज्यादा बार देखा जा चुका है और 1 लाख 71 हजार से ज्यादा लाइक्स मिल चुके हैं। इस पोस्ट पर 21 हजार से ज्यादा कमेंट्स भी आ चुके हैं, जिनमें से अधिकांश ने महिलाओं की सार्वजनिक अनुपस्थिति पर हैरानी जताई है।

शहबाज शरीफ ने बाइडन को पत्र लिखा, जेल में कैद में पाकिस्तानी महिला को रिहा करने का आग्रह किया

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन को पत्र लिखकर उस पाकिस्तानी महिला को रिहा करने का आग्रह किया है, जो आतंकवाद के जुर्म में अमेरिका में 86 साल की जेल की सजा काट रही है। सरकारी वकील ने इस्लामाबाद की एक अदालत को शुक्रवार को यह जानकारी दी। शरीफ के पत्र की एक प्रति अदालत में सौंपी गई, जो अमेरिका में प्रशिक्षित तंत्रिका तंत्र विज्ञानी आफिया सिद्दिकी की बहन की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। आफिया को 2010 में अमेरिकी नागरिकों की हत्या का प्रयास करने सहित अन्य आरोपों में दोषी करार दिया गया था। आफिया आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्तता को लेकर तब शक के दायरे में आ गई थी, जब उसने अमेरिका छोड़ दिया और 11 सितंबर 2011 को अमेरिका में हुए आतंकवादी हमलों के स्वघोषित साजिशकर्ता खालिद शेख मोहम्मद से निकाह कर लिया। 2008 में वह अफगानिस्तान में अमेरिकी प्राधिकारियों के साथ झड़प में घायल हो गई थी। चश्मदीदों के मुताबिक, उसने अमेरिकी प्राधिकारियों पर गोली चलाई थी।

शरीफ के 13 अक्टूबर को भेजे पत्र की एक प्रति के मुताबिक, पाक प्रधानमंत्री ने बाइडन को बताया कि आफिया जेल में 16 साल की अवधि काट चुकी है। उन्होंने लिखा कि मामले को दया की नजर से देखा जाना चाहिए। शरीफ ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में कई पाकिस्तानी अधिकारियों ने उससे राजनयिक मुलाकात की और उसे मिलने वाले उपचार को लेकर गंभीर चिंता व्यक्त की, जिससे उसके पहले से ही कमजोर मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ा है। पाक प्रधानमंत्री ने अधिकारियों के आकलन के हवाले से लिखा कि दरअसल, उन्हें डर है कि वह अपनी जान ले सकती है। उन्होंने बाइडन से आफिया की बहन की क्षमादान याचिका स्वीकार करने और मानवीय आधार पर उसकी रिहाई का आदेश देने का आग्रह किया।

जापान की सत्तारूढ़ पार्टी के मुख्यालय पर बम हमला, संदिग्ध गिरफ्तार- मीडिया रिपोर्ट

टोक्यो, एजेंसी। जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की 2022 में उस समय हत्या कर दी गई थी जब वह संसदीय चुनाव के लिए सत्तारूढ़ पार्टी के एक उम्मीदवार के प्रचार में भाषण दे रहे थे। जापान की सत्तारूढ़ पार्टी के मुख्यालय में शनिवार को एक व्यक्ति ने कई बम फेंके जिसके बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। सार्वजनिक प्रसारणकर्ता 'एनएचके' और अन्य जापानी मीडिया ने यह जानकारी दी।

इस हमले में किसी के घायल होने की खबर नहीं है। टोक्यो पुलिस ने इस घटना के संबंध में टिप्पणी करने से इनकार कर दिया और कहा कि मामले की जांच अभी जारी है। समाचार रिपोर्ट में बताया गया है कि आरोपी को मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया गया। इसमें बताया गया कि आरोपी ने अपनी कार को पास की बाड़ में घुसा दिया था। अभी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि हमले के पीछे उसका मकसद क्या था।

सत्तारूढ़ 'लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी' संदिग्ध वित्तपोषण और कर चोरी से जुड़े घोटाले के कारण आमजन के बीच तेजी से लोकप्रियता खोती जा रही है। हमले के संबंध में पार्टी ने भी टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। देश की संसद के निचले सदन के लिए मतदान 27 अक्टूबर को होगा। कुछ दागी नेताओं से सत्तारूढ़ पार्टी ने आधिकारिक रूप से समर्थन वापस ले लिया है लेकिन वे निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ रहे हैं।

'लिबरल डेमोक्रेट्स' लंबे समय से जापान में सत्ता में रही है। द्वितीय विश्व युद्ध की तबाही से जापान को आर्थिक महाशक्ति बनाने में उसकी बड़ी भूमिका है। जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की 2022 में उस समय हत्या कर दी गई थी जब वह संसदीय चुनाव के लिए सत्तारूढ़ पार्टी के एक उम्मीदवार के प्रचार में भाषण दे रहे थे। हत्यारे ने हस्तनिर्मित बंदूक का इस्तेमाल किया था और कहा था कि वह आबे से इसलिए नाराज था क्योंकि उसकी मां ने परिवार का सारा पैसा 'यूनिफिकेशन चर्च' को दे दिया था और वह आबे को उस चर्च से जुड़ा मानता था।

यूक्रेन के खिलाफ युद्ध के लिए उत्तर कोरिया ने भेज दी सेना, इस देश में मची खलबली

कीव, एजेंसी। यूक्रेन के खिलाफ रूस के युद्ध में अब उत्तर कोरिया भी कूद पड़ा है। दक्षिण कोरिया की मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो उत्तर कोरियाई सैनिक रूस की तरफ से युद्ध कर रहे हैं। कम से कम 1500 सैनिक रूस पहुंच चुके हैं। वहीं उत्तर कोरिया अपने 12 हजार सैनिकों को रूस भेजेगा। इससे पहले यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की ने भी ऐसा ही दावा किया था। उन्होंने कहा था कि 10 हजार उत्तर कोरियाई सैनिक रूस के लिए युद्ध लड़ सकते हैं।

दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति यून सुक येओल ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को चेतावनी देते हुए कहा है कि उत्तर कोरिया का यह कदम बेहद खतरनाक साबित हो सकता है। नेशनल इंटेलिजेंस सर्विसेज की बैठक के दौरान राष्ट्रपति ने कहा कि इस मामले को लेकर यूक्रेन के संपर्क में हैं और एआई का इस्तेमाल करके उत्तर कोरियाई अधिकारियों को पहचानने का प्रयास किया जा रहा है। वे यूक्रेन के दोनेत्स्क में ममौजूद हैं और रूस की तरफ से उत्तर कोरियाई मिसाइल फायर करने में मदद कर रहे हैं।

वहीं एक वीडियो भी सामने आया है जिसमें उत्तर कोरियाई सैनिक रूस के मिलिट्री बेस पर पहुंचते हुए दिखाई दे रहे हैं। एजेंसी ने पुष्टि की है कि उत्तर कोरिया ने हथियार भेजने के बाद अब सैनिक भी भेजने शुरू कर दिए हैं। इससे पहले उत्तर कोरिया ने बलिस्टिक मिसाइल, एंटी टैंक रॉकेट और 13 हजार से ज्यादा कंटेनर रूस के सप्लाई किए थे।

दक्षिण कोरिया का मानना है कि 80 लाख आर्टिलरी और रॉकेट राउंट रूस भेजे गए हैं। रूस और उत्तर कोरिया इस समय काफी नजदीक आ गए हं। दक्षिण कोरिआई एजेंसी ने अमेरिका से भी संपर्क किया है और इस मामले में आवश्यक कदम उठाने की बात कही है। दक्षिण कोरिया ने कहा है कि अगर यह बात सच है तो यह खतरे की घंटी है। इससे संघर्ष और बढ़ सकता है। वहीं अमेरिका और नाटो को तत्काल प्रतिक्रिया देने की जरूरत है।

बांग्लादेश के कानून मंत्री बोले- शेख हसीना का प्रत्यर्पण जरूरी, भारत ने मना किया तो विरोध करेंगे

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार में कानून मंत्री आसिफ नजरुल ने शुक्रवार को कहा कि अगर भारत पूर्व पीएम शेख हसीना के प्रत्यर्पण से इनकार करने की कोशिश करता है तो इसका कड़ा विरोध किया जाएगा। न्यूज एजेंसी पीटीआई के मुताबिक बांग्लादेश के इंटरनेशनल क्राइम्स ट्रिब्यूनल ने शेख हसीना के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया था, इसके बाद नजरुल ने यह टिप्पणी की। बांग्लादेशी अदालत ने गुरुवार को आदेश दिया था कि वे हसीना को 18 नवंबर तक उसके समक्ष पेश करें।

मंत्री नजरुल ने कहा कि बांग्लादेश और भारत के बीच पहले से ही एक प्रत्यर्पण संधि है। भारत नियमों का हवाला देकर शेख हसीना को यहां भेजने से इनकार कर सकता है, लेकिन ईमानदारी से कहें तो भारत हसीना को बांग्लादेश भेजने के लिए बाध्य है। विदेश मंत्रालय बोला- सुरक्षा वजहों से भारत में शेख हसीना शेख हसीना पर छात्र आंदोलन के दौरान हिंसा और मानवाधिकार के उल्लंघन के आरोप हैं। उन पर 200 से ज्यादा मामले चल रहे हैं। शेख हसीना 5 अगस्त को बड़े पैमाने पर हिंसा होने के बाद अपनी छोटी बहन के साथ भारत आ गई थीं। इसके बाद बांग्लादेश ने उनका राजनयिक पासपोर्ट रद्द कर दिया था। भारत के विदेश मंत्रालय ने गुरुवार को कहा था कि शेख हसीना सुरक्षा वजहों से भारत आई थीं और वह अभी यहीं पर हैं। माना जाता है कि शेख हसीना को किसी अज्ञान जगह पर रखा गया है। तब से उन्हें सार्वजनिक रूप से नहीं देखा गया है। नजरुल ने पिछले महीने कहा था कि बांग्लादेश औपचारिक रूप से हसीना के प्रत्यर्पण की मांग करेगा, जब मुकदमा प्रक्रिया शुरू होगी। वहीं, शेख हसीना के विरोधी नेता रूहुल कबीर रिजवी ने कहा कि हसीना को शरण देना एक हत्यारे और अपराधी को शरण देने जैसा है। हमें उसे उचित कूटनीतिक प्रक्रिया के माध्यम से वापस लाना होगा। बांग्लादेश के विदेश मंत्री मोहम्मद तौहीद हुसैन ने सितंबर में कहा था कि शेख हसीना को सौंपना है या नहीं यह भारत तय करेगा।

भारत-बांग्लादेश के बीच प्रत्यर्पण संधि को और आसान बनाया गया भारत-बांग्लादेश के बीच हुए प्रत्यर्पण संधि के मुताबिक दोनों देशों को गिरफ्तारी वारंट के अलावा अपराध के सबूत भी साझा करने होते थे। हालांकि, साल 2016 में इस नियम को खत्म कर दिया गया था ताकि अपराधियों का प्रत्यर्पण जल्दी हो सके। संधि के मुताबिक अगर किसी व्यक्ति ने राजनीति से जुड़ा कोई अपराध किया है तो उसके प्रत्यर्पण से इनकार किया जा सकता है, लेकिन किस अपराध को राजनीतिक नहीं कहा जाएगा, इसकी लिस्ट काफी लंबी है। इनमें हत्या, गुमशुदगी, बम विस्फोट और आतंकवाद जैसे अपराध शामिल हैं। ऐसे संगीन मामले में प्रत्यर्पित करने से इनकार नहीं किया जा सकता।

‘सिंघम अगेन’ का पहला गाना जय बजरंगबली रिलीज

मुंबई। बहुप्रतीक्षित रोहित शेट्टी की कॉप यूनिवर्स फिल्म ‘सिंघम अगेन’ का पहला गाना ‘जय बजरंगबली’ रिलीज हो गया है। हनुमान चालीसा से प्रेरित और अपने वीडियो में रामायण के संदर्भों को प्रदर्शित करने वाला यह शक्तिशाली ट्रैक त्योहारी सीजन के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। यह गाना अपने आध्यात्मिक सार और हाई-एनर्जी बीट्स के साथ धूम मचाने के लिए तैयार है। गाना रिलीज होते ही यूट्यूब पर छा गया है और इसके व्यूज तेजी से बढ़ रहे हैं। ‘जय बजरंगबली’ गाने को कई प्रतिभाशाली गायकों ने अपनी आवाज दी है। इनमें श्रीकृष्ण, करीमुल्लाह, अरुण कौंडिन्य, चैतू सत्संगी, श्री साई चरण, सुधांशु, रितेश जी राव, सात्विक जी राव, पृथ्वी चंद्रा आदि शामिल हैं।

लाइफ Style

श्रद्धा
जितना हो सके, उतना रहना चाहिए रियल

श्रद्धा कपूर फिल्मों में बेहतरीन अभिनय करने के लिए जानी जाती हैं। हाल ही में उनकी फिल्म ‘स्त्री-2’ भी काफी चर्चा में रही, इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर बहुत अच्छा बिजनेस किया। फिल्म में उनके अभिनय से समीक्षक और दर्शक दोनों ही प्रभावित हुए।

एजेंसी ⏩ नई दिल्ली

एक तरफ श्रद्धा जहां अपनी एक्टिंग के जरिए दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करने की कोशिश करती हैं। वहीं सोशल मीडिया पर भी अपने फैंस से कनेक्ट रहती हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर उनके फॉलोइंग की बात की जाए तो उन्हें 9 करोड़ 36 लाख लोग फॉलो करते हैं। इस तरह से वह इंस्टाग्राम पर सबसे ज्यादा फॉलो की जाने वाली भारतीय अभिनेत्री बन गई हैं। इस उपलब्धि के बारे में श्रद्धा कहती हैं कि वह खुद को इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर रियल रखने की कोशिश करती हैं। वह कहती हैं, ‘ मैंने सोचा भी नहीं था कि सोशल मीडिया पर सबसे ज्यादा फॉलोअर होना इतनी बड़ी बात होगी। दरअसल, लोग हमें ज्यादा से ज्यादा देखना चाहते हैं, इसलिए जितना हो सके, उतना रियल रहना चाहिए। जो आप हैं, वह सोशल मीडिया पर दिखाना चाहिए।’ इस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर वह अपने फैंस के साथ कनेक्ट भी होती हैं, कमेंट सेक्शन में उनकी बातों के जवाब भी देती हैं। इस तरह अपने फैंस से कनेक्ट रहने के कारण ही, उनकी फैन फॉलोइंग लगातार बढ़ती रहती है। श्रद्धा कहती हैं, ‘इंस्टाग्राम के कमेंट सेक्शन में बहुत ही एंटरटेनिंग लोग होते हैं, मुझे उनके कमेंट पढ़कर बड़ा मजा आता है।’

हॉलीवुड मसाला

नए जॉन-जेन की तलाश में मेकर्स

लॉस एंजिल्स। इस साल की शुरुआत में ही प्राइम वीडियो पर एक सीरीज ‘मिस्टर एंड मिसेज स्मिथ’ रिलीज हुई थी। इंट्रेस्टिंग स्टोरीलाइन, डायरेक्शन और बेहतरीन एक्टिंग का मिश्रण इस सीरीज में दर्शकों को देखने को मिला था, इसलिए इस सीरीज को काफी पसंद किया गया था। यही वजह है कि दर्शकों को इसके अगले सीजन का बेसब्री से इंतजार है। दर्शकों का यह इंतजार जल्द ही खत्म हो सकता है। क्योंकि ,हाल ही में इस सीरीज के मेकर्स ने अनाउंस किया है कि वह सीरीज के लीड कैरेक्टर्स जेन और जॉन के लिए नए चेहरों की तलाश कर रहे हैं।

धूम मचाने आ रहा है पीटर पार्कर...

लॉस एंजिल्स। मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स के फैंस के लिए बड़ी खुशखबरी है। टॉम हॉलैंड और जेंडाया के साथ ‘स्पाइडर मैन 4’ की तैयारियां शुरू हो गई हैं। दोनों एक्टर्स ने फिल्म की स्क्रिप्ट का पहला ड्राफ्ट भी पढ़ लिया है। टॉम ने कहा कि यह बहुत ही रोमांचक है। लेकिन, इस पर अभी काम करने की जरूरत है। मार्वल के फैंस के लिए एक खुशखबरी है। टॉम हॉलैंड ने हाल ही ‘स्पाइडर मैन 4’ को लेकर दिलचस्प खुलासा किया है। उन्होंने बताया है कि कुछ हफ्ते पहले ही उन्होंने अपनी को-स्टार जेंडाया के साथ ‘स्पाइडर मैन 4’ की सक्रिप्ट का फर्स्ट ड्राफ्ट पढ़ा है। मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स अपने फेज-5 में है। एमसीयू की पिछली फिल्म ‘डेडपूल एंड वुल्वरीन’ सुपरहिट रही है। टॉम हॉलैंड ने रिच रोल पॉडकास्ट में ‘स्पाइडर मैन’ फ्रेंचाइज की अगली फिल्म का जिक्र किया है।

प्रियंका ने वेस्टर्न लुक में ढाया कहर

नई दिल्ली। प्रियंका चोपड़ा की प्रोडक्शन फिल्म ‘पानी’ रिलीज हो चुकी है। इस मराठी ड्रामा का निर्देशन अदिनाथ एम कोठारे ने किया है, जो इस फिल्म में मुख्य भूमिका में भी हैं। फिल्म में आदिनाश समेत रुचा वैद्य, सुबोध भावे, राजित कपूर, किशोर कदम, नितिन दीक्षित, सचिन गोस्वामी, मोहनबाई, श्रीपद जोशी और विकास पांडुरंग पाटिल भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। बीती रात मुंबई में ‘पानी’ की भव्य स्क्रीनिंग आयोजित की गई, जिसमें देसी गर्ल परिवार के साथ शिरकत करती नजर आईं। प्रियंका चोपड़ा ने एक चमकदार बेज रंग का गाउन पहनकर सारी लाइमलाइट चुरा ली। उन्होंने अपने आउटफिट को डायमंड ईयरिंग, स्टेटमेंट ब्रेसलेट और सिल्वर हाई हील्स के साथ स्टाइल किया था। डीवा ने अपने लुक को ग्लैम मेकअप और एक स्लीक बन के साथ पूरा किया।

सनी की फिल्म ‘जाट’ की शूटिंग शुरू

मुंबई। सनी देओल की पाइपलाइन में कई चर्चित फिल्में हैं। सनी ने अगली फिल्म के लिए साउथ के सफल निर्देशक गोपीचंद मालिनेनी के साथ हाथ मिलाया है। शुरू में ‘एसडीजीएम’ नाम से चर्चित इस फिल्म का आधिकारिक शीर्षक ‘जाट’ है। फिल्म निर्माता ‘जाट’ के लिए गणतंत्र दिवस 2025 सप्ताहांत रिलीज का लक्ष्य बना रहे हैं। मैत्री मूवी मेकर्स ने अभिनेता के धाकड़ पोस्टर के साथ कैप्शन में लिखा, ‘बड़े पैमाने पर कार्रवाई के लिए राष्ट्रीय परमिट वाले व्यक्ति का परिचय।’ सनी जाट के रूप में जुड़ गए हैं।’ मास एक्शन एंटरटेनर विशेषज्ञ के रूप में प्रख्यात गोपीचंद मालिनेनी वर्तमान में अपने करियर की अब तक की सबसे महत्वाकांक्षी फिल्म का निर्देशन कर रहे हैं। सनी देओल की मुख्य भूमिका वाली इस फिल्म की शूटिंग वर्तमान में हैदराबाद में की जा रही है।

टीवी मसाला

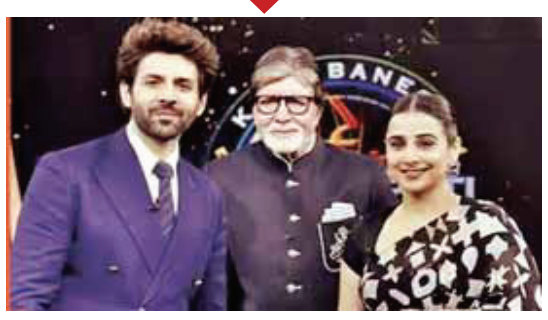

सालों बाद बिग बी ने पूरी की विद्या बालन की ख्वाहिश...

नई दिल्ली। विद्या बालन और कार्तिक आर्यन हाल ही में अमिताभ बच्चन के शो कौन बनेगा करोड़पति 16 में आए। दोनों अपनी अपकमिंग फिल्म भूल भुलैया 3 के प्रमोशन के लिए आए थे। तीनों ने साथ में काफी मस्ती की। इस दौरान का एक प्रोमो सामने आया है जिसमें विद्या, बिग बी से अपने दिल की बात करती हैं। वह कहती हैं कि बिग बी को लेकर उनकी एक ख्वाहिश थी जो अधूरी रह गई थी। लेकिन अब सालों बाद बिग बी ने उनकी इस ख्वाहिश को पूरा कर दिया है। विद्या ने कहा, पा की शूटिंग के दौरान एक सीन था बच्चन सर के साथ। मैं आज रपट जाए तो हमें ना उठाइयो गाने पर डांस करना था, लेकिन मैं आपकी मां का किरदार निभा रही थी तो मैंने मंकी डांस किया। ख्वाहिश अधूरी रह गई सर। बिग बी फिर विद्या को स्टेज पर डांस करने के लिए कहते हैं। दोनों ने फिर इसी गाने पर डांस किया। बिग बी ने आखिरकार विद्या की इस पुरानी ख्वाहिश को पूरा कर ही दिया। इस वीडियो पर फैंस दोनों पर खूब प्यार लुटा रहे हैं। सभी को दोनों का डांस पसंद किया। कोई कमेंट कर रहा है कि मजा आ गया दो टैलेंटेड एक्टर्स को साथ देखकर। एक ने लिखा कि दोनों को फिर साथ कास्ट कर दो कोई।

रजनी बन घर-घर मशहूर हुईं प्रिया

नई दिल्ली। प्रिया तेंदुलकर ने फिल्म-टीवी दोनों ही मीडियम में काम किया था। उन्होंने फिल्मों में, धारावाहिकों में बेहतरीन अभिनय के जरिए दर्शकों के दिलों में खास जगह बनाई थी। खासकर दूरदर्शन पर साल 1985 में धारावाहिक ‘रजनी’ से वह दर्शकों के बीच बहुत लोकप्रिय हो गई थीं। इस धारावाहिक में उन्होंने एक गृहिणी की भूमिका निभाई थी, जो कि भ्रष्टाचार और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ती है। इस धारावाहिक ने उस समय सामाजिक बदलाव लाने में अहम भूमिका निभाई थी और प्रिया तेंदुलकर को घर-घर मशहूर भी कर दिया था। इसके अलावा वह कॉमेडी सीरियल ‘हम पांच(1995)’ का भी हिस्सा रहीं। इस सीरियल में भी उनके किरदार को काफी पसंद किया गया। उन्होंने मॉडलिंग में काम किया और बतौर न्यूज रीडर भी जॉब की। लेकिन कहीं भी उनका मन नहीं लगा। आखिर में उन्होंने एक्टिंग की राह ही पकड़ी। प्रिया ने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत श्याम बेनेगल की फिल्म ‘अंकुर (1974)’ से की थी।

साई पल्लवी के साथ काम करना चाहते हैं मणिरत्नम

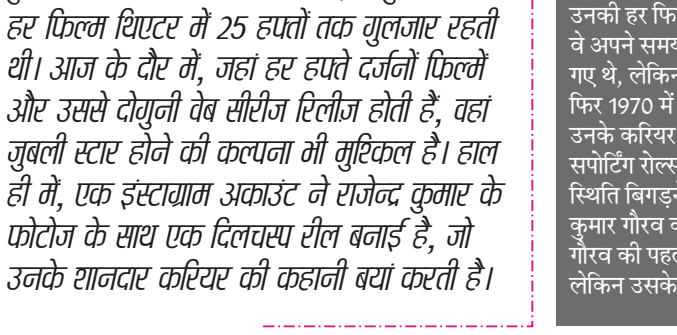

मुंबई। शिवकार्तिकेयन और साई पल्लवी अभिनीत ‘अमरन’ के प्री रिलीज इवेंट का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता लोकेश कनगराज और मणिरत्नम भी इस फिल्म में शामिल हुए। इस बातचीत के दौरान मणिरत्नम ने साई पल्लवी के साथ काम करने की इच्छा जताई। मणिरत्नम ने साई पल्लवी की तारीफ की। उन्होंने कहा कि वह उनके बहुत बड़े प्रशंसक हैं। निर्देशक ने कहा, मैं तुम्हारा बहुत बड़ा प्रशंसक हैं। मैं आशा करता हूं कि कभी मुझे भी तुम्हारे साथ काम करने का मौका मिलेगा। इसके बाद कार्यक्रम स्थल पर जोर से तालियां बजने लगीं। इसमें सबसे ज्यादा संख्या साई पल्लवी के प्रशंसक शामिल रहे। साई पल्लवी ने इस बात पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, सिनेमा में आने से पहले, मैं कई सारे निर्देशकों को नहीं जानती थी लेकिन मैं मणिरत्नम का नाम पहले से जानती थी। वह एक बड़ा कारण हैं, जिनके लिए मैंने अपनी सक्रिप्ट और किरदारों को लेकर इतनी सजग रहती हूं।

सीन से पहले पीते थे रम, कहते ‘आंखों में शराब दिखनी चाहिए’

‘देवदास’ के बाद शाहरुख को लग गई थी शराब की लत...

मुंबई। बॉलीवुड के बादशाह सुपरस्टार शाहरुख खान ने हाल ही में 2002 की फिल्म ‘देवदास’ के बारे में बात की। उन्होंने ये भी कहा कि इसके बाद उन्हें शराब की लत लग गई थी। ‘देव’ को प्ले करने में बहुत मेहनत लगी, लेकिन उन्होंने बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड भी जीता। संजय लीला भंसाली को फिल्म ने जबरदस्त सफलता दिलाई। हालांकि, हाल ही में एक इंटरव्यू में, किंग खान ने खुलासा किया कि कैसे देव के कैरेक्टर ने उनकी जिंदगी बदल दी।

करना चाहते थे बड़े रोल : उन्होंने बताया कि कैसे उस समय वह छोटे रोल्स नहीं करना चाहते थे। ऐसा इसलिए क्योंकि वह अपने दिवंगत माता-पिता को प्राउड कराना चाहते थे।

दिलीप कुमार और उत्तर कुमार के रास्ते पर चले : शरत चंद्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास पर आधारित भंसाली की फिल्म में शाहरुख एक परेशान शराबी ‘देव’ का रोल कर रहे थे, एक ऐसा किरदार जिसे पहले उत्तम कुमार और दिलीप कुमार जैसे कई एक्टर्स ने निभाया था।

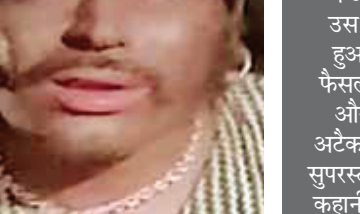

फिल्म के बाद लगी शराब पीने की लत : उन्होंने कहा- मैंने उस एक हारे हुए आदमी को प्ले किया है, जिसके पास प्यार के लिए अपने कारण थे मैं चाहता था कि वह असली हो मैंने सेट पर थोड़ी शराब पी थी इससे मदद मिली, लेकिन मैंने फिल्म के बाद शराब पीना शुरू कर दिया। तो यह इसका एक नकारात्मक पहलू था।

किसी कैरेक्टर में डूब जाते थे शाहरुख : शाहरुख खान जब अपने करियर के बारे में बात करते हैं, तो बताते हैं कि किसी कैरेक्टर के लिए वो उसमें डूब जाते थे। यही कारण था कि देव को प्ले करने के लिए उन्होंने शराब पी।

करने लगे मेथड-एक्टिंग

ऐसे रोल की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए, शाहरुख ने ‘देव’ के लिए मेथड-एक्टिंग को फॉलो करने का फैसला किया, जिसके लिए उन्हें कुछ सीन्स में शराब पीने की जरूरत थी।

बैक-टू-बैक पीते थे रम

इस साल की शुरुआत में, बातचीत में शाहरुख के को-एक्टर टीकू तल्सानिया ने याद किया था कि कैसे शाहरुख फिल्म के कुछ सीन्स की शूटिंग से पहले रम के बैक-टू-बैक शॉट्स लेते थे।

एक्टिंग तो हो जाएगी पर...

उन्होंने जब उनसे इस बारे में पूछा तो शाहरुख ने कहा- सर, एक्टिंग तो हो जाएगी। आंखों में शराब दिखती नहीं है ना, उसका क्या।

ब्लॉकबस्टर हुई ‘देवदास’

ये किस्से इस बात को दिखाते हैं कि क्यों शाहरुख खान को एक सच्चे सुपरस्टार के रूप में जाना जाता है। ऐश्वर्या राय बच्चन और माधुरी दीक्षित के साथ वाली शाहरुख खान की ‘देवदास’ एक ब्लॉकबस्टर हिट बन गई।

बना सबसे अमीर एक्टर फिर आखिरी वक्त में 60 हजार में बेचना पड़ा घर

इस सुपरस्टार की हर फिल्म 25 हफ्ते तक चलती थीं सिनेमाघरों में

नई दिल्ली। *इंटरनेट और OTT के इस दौर में आज की नई पीढ़ी जुबली स्टार की अहमियत शायद ही समझ सकेगी. दरअसल, जुबली स्टार ये एक तमगा था, जो गुजरे जमाने के मशहूर एक्टर राजेंद्र कुमार को दिया गया था। क्योंकि. इस सुपरस्टार की हर फिल्म थिएटर में 25 हफ्तों तक गुलजार रहती थी। आज के दौर में, जहां हर हफ्ते दर्जनों फिल्में और उससे दोगुनी वेब सीरीज रिलीज़ होती हैं, वहां जुबली स्टार होने की कल्पना भी मुश्किल है। हाल ही में, एक इंस्टाग्राम अकाउंट ने राजेन्द्र कुमार के फोटोज के साथ एक दिलचस्प रील बनाई है, जो उनके शानदार करियर की कहानी बयां करती है।*

इसलिए जुबली स्टार पड़ा नाम

राजेन्द्र कुमार ने 60 के दशक की शुरुआत में कार्टर रोड पर एक भूतिया बंगला खरीदा और फिर उनकी किस्मत रातों-रात बदल गई। 1963 से 1966 के बीच आई उनकी सभी फिल्में हिट रहीं। उनका नाम तब जुबली कुमार के नाम से मशहूर हो गया, क्योंकि उनकी हर फिल्म थिएटर में 25 हफ्तों तक चलती थी। वे अपने समय के सबसे अमीर एक्टर्स में शामिल हो गए थे, लेकिन उन्हें कभी कोई अवॉर्ड नहीं मिला। फिर 1970 में राजेश खन्ना के आगमन के साथ ही उनके करियर का सितारा ढलने लगा। अब उन्हें सपोर्टिंग रोल्स के ऑफर मिलने लगे और आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी। 1980 में, उन्होंने अपने बेटे कुमार गौरव को लॉन्च करने का फैसला किया। कुमार गौरव की पहली फिल्म ‘लव स्टोरी’ सुपरहिट रही, लेकिन उसके बाद उनकी कोई भी फिल्म नहीं चली।

आखिरी दिनों में बेचना पड़ा था बंगला

बेटे के लिए लगातार फिल्में बनाने के चलते राजेन्द्र को अपना बंगला भी बेचना पड़ा। उन्होंने 60 हजार में अपना बंगला राजेश खन्ना को बेच दिया और उस रात रोते रहे। 68 की उम्र में उन्हें ब्लड कैंसर हुआ, लेकिन राजेन्द्र ने अपनी शर्तों पर जीने का फैसला किया। दवा खाने से उन्होंने मना कर दिया और अपने बेटे के जन्मदिन की अगली रात हार्ट अटैक से उनकी मौत हो गई। इस तरह, एक अमीर सुपरस्टार की जिंदगी का अंत बेहद दर्दनाक रहा। ये कहानी न केवल उनके संघर्ष और स्टारडम की है, बल्कि ये कहानी जिंदगी के चढ़ाव और उतार की है। ये कहानी जिंदगी में मिलने वाली सफलता और असफलता की भी है। ये कहानी हमें ये भी बताती है कि ऊंचे से ऊंचे मुकाम पर पहुंचने के बाद भी संघर्ष कैसे जारी रहता है।

चेप्टेगी ने जीती वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

लंबी दूरी के महान धावक युगांडा के जोशुआ चेप्टेगी ने वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन जीत ली जो ट्रैक से रिटायर होने के बाद उनका पहला खिताब है। पुरुषों की 10,000 मीटर दौड़ में मौजूदा विश्व चैंपियन और ओलंपिक चैंपियन चेप्टेगी ने 59 मिनट 46 सेकंड का समय लिया।

भारत में 2014 में बेंगलुरु में टीसीएस हाफ मैराथन के जरिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदार्पण करने वाले चेप्टेगी उस समय दूसरे स्थान पर रहे थे। कीनिया के एलेक्स मटाटा (59.53) दूसरे और किपकोरिर (59.59) तीसरे स्थान पर रहे। महिला वर्ग में इथियोपिया की एलेमाडिस इयायु ने खिताब अपने नाम किया। इयायु ने एक घंटे 8 मिनट और 17 सेकंड का समय लिया। इथियोपिया की सिंथिया लिमो (1:08.27) दूसरे और टिरूये मेसफिन (1:09.42) तीसरे स्थान पर रही। सावन बरवाल ने (एक घंटा, दो मिनट और 46 सेकंड) और लिली दास (एक घंटा 18 मिनट और 12 सेकंड) ने क्रमशः भारतीय पुरुष और महिला वर्ग के शीर्ष खिताब जीते।

न्यूजीलैंड ने भारत में 36 साल बाद जीता टेस्ट, 8 विकेट से मिली हार

एजेंसी ▶▶| बेंगलुरु

सीरीज का दूसरा मैच पुणे में 24 से 28 अक्टूबर के बीच खेला जाएगा

न्यूजीलैंड ने जसप्रीत बुमराह के खतरनाक स्पैल का डटकर सामना करते हुए आखिरी दिन किसी चमत्कार की भारत की कोशिशों पर पानी फेर दिया। पहला टेस्ट आठ विकेट से जीतकर न्यूजीलैंड ने 36 साल बाद भारतीय सरजमीं पर पारंपरिक प्रारूप में सफलता का स्वाद चखा। आखिरी बार न्यूजीलैंड ने भारत को 1988 में जॉन राइट की कप्तानी में वानखेड़े स्टेडियम पर 136 रन से हराया था। जीत के लिए 107 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए न्यूजीलैंड ने शुरुआती झटकों के बाद कोई कोताही नहीं बरती। विल यंग 48 रन बनाकर और रचिन रविंद्र 39 रन बनाकर नाबाद रहे। दोनों ने तीसरे विकेट के लिए 75 रन की अटूट साझेदारी करके टीम को तीन मैचों की श्रृंखला में 1-0 से बढ़त दिला दी। पहली पारी में 46 रन पर आउट होने के बावजूद भारत ने जिस तरह मैच में वापसी की थी, वह काबिले तारीफ है। टीम इंडिया दूसरी पारी में 462 रन पर ऑलआउट हो गई। न्यूजीलैंड ने पहली पारी में 402 रन बनाए थे। सीरीज का दूसरा मुकाबला पुणे में 24 से 28 अक्टूबर के बीच खेला जाएगा। न्यूजीलैंड से पहले टेस्ट में आठ विकेट से हारने के बावजूद भारतीय टीम विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप तालिका में शीर्ष पर बनी हुई है। भारत का प्रतिशत गिरकर 68 .06 हो गया है और अब उसे आगामी दो टेस्ट तथा आस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला में बेहतरीन प्रदर्शन करना होगा।

टी-20 विश्वकप : दक्षिण अफ्रीका को हराकर न्यूजीलैंड की महिला टीम पहली बार बनी चैंपियन

- न्यूजीलैंड ने पहले खेलते हुए 158 रन बनाए, जवाब में दक्षिण अफ्रीका को 126 रन पर ही रोक दिया

भाषा ▶▶| दुबई

अनुभवी अमेलिया केर के हरफनमौला खेल के दम पर न्यूजीलैंड ने महिला टी20 विश्व कप के फाइनल में रविवार को यहां दक्षिण अफ्रीका को 32 रन से हराकर पहली बार इस खिताब को अपने नाम किया। 'प्लेयर ऑफ द मैच' केर ने बल्ले से सबसे ज्यादा 43 रन बनाने के बाद तीन विकेट चटका कर मैच पर न्यूजीलैंड का दबदबा कायम किया। उन्होंने ब्रूक हैलिडे (38) के साथ चौथे विकेट के लिए 44 गेंद में 57 रन की साझेदारी कर बड़े स्कोर की नींव रखी। न्यूजीलैंड ने पहले बल्लेबाजी का न्योता मिलने पर पांच विकेट पर 158 रन बनाने के बाद पिछली बार की उपविजेता टीम दक्षिण अफ्रीका को नौ विकेट पर 126 रन पर रोक कर चैम्पियन बनने के उसके सपने को पूरा नहीं होने दिया। दक्षिण अफ्रीका के लिए कप्तान लौरा वुलवोर्ट ने 27 गेंद में 33 रन का योगदान दिय लेकिन उन्हें टीम के दूसरे बल्लेबाजों से अच्छा योगदान नहीं मिला।

क्लोई ट्रायोन और नडिन डी क्लर्क को मिली एक-एक सफलता

दक्षिण अफ्रीका के लिए एन. म्लाबा ने दो जबकि आयाबोंगा खाका, क्लोई ट्रायोन और नडिन डी क्लर्क को एक-एक सफलता मिली। लक्ष्य का पीछा करते हुए शानदार लय में चल रही लौरा वुलवार्ट ने शुरुआती चार ओवरों में चार चौके लगाकर टीम की रनगति को बनाये रखा। तेजमिन ब्रिट्स ने छठे ओवर में रोजमेरी मायर्स के खिलाफ चौका लगाया जिससे पावर प्ले में टीम का स्कोर बिना किसी नुकसान के 47 रन हो गया। न्यूजीलैंड ने पावरप्ले के बाद मैच पर शिकंजा कसना शुरू किया। फ्रैन जोनास ने सातवें ओवर में ब्रिट्स की 18 गेंद में 17 रन की पारी को खत्म करने के साथ पहले विकेट के लिए 51 रन की साझेदारी को तोड़ा। दसवें ओवर में गेंदबाजी के लिए आयी टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाली अमेलिया केर ने टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाली वुलवोर्ट को पवेलियन की राह दिखाने के बाद एनेक बोश (चार रन) को विकेटकीपर गेज के हाथों कैच कराया।

एक ओवर में दो विकेट गंवाने के बाद अफ्रीका आई बैकफुट पर

एक ओवर में दो विकेट गंवाने के बाद दक्षिण अफ्रीका की टीम बैकफुट पर आ गयी। दक्षिण अफ्रीका ने 11वें ओवर की आखिरी और 12वें ओवर की पहली गेंद पर दो और विकेट गंवा दिये। ईडन कार्सन ने मरिजान कैप (आठ) को जॉर्जिया प्लिमर के हाथों कैच कराया जबकि नाडिन डि क्लर्क (छह) जरूरी रनगति के 12 से अधिक होने के बाद क्लोई ट्रायोन ने लिया तहुहू के खिलाफ चौका जड़ा लेकिन 16वें ओवर में गेंदबाजी के लिए आयी हैलिडे ने सुने लूस (आठ) को पवेलियन की राह दिखाई। केर ने अपने 18वें ओवर में अनरी डर्कसन को बेट्स के हाथों कैच कराकर टूर्नामेंट में 15 विकेट पूरे किये। मेयर ने अगले ओवर क्लोई ट्रायोन (14) और सिनालो जाफ्ता (छह) को आउट कर न्यूजीलैंड की जीत लगभग पक्की कर दी।

प्लिमर ने शुरूआती ओवर में जड़े दो चौके

इससे पहले प्लिमर ने शुरुआती ओवर में कैप के खिलाफ दो चौके लगाये लेकिन खाका ने अगले ओवर में उनकी नौ रन की पारी को खत्म कर दक्षिण अफ्रीका को पहली सफलता दिलायी। केर ने क्रीज पर आते ही चौके से खाता खोला तो वहीं बेट्स ने खाका के खिलाफ चौथे ओवर का अंत चौके से किया। उन्होंने छठे ओवर में म्लाबा के खिलाफ अपनी पारी का तीसरा चौका लगाया जिससे पावर प्ले में न्यूजीलैंड ने एक विकेट पर 43 रन बना लिये थे। म्लाबा ने आठवें ओवर में बेट्स को बोल्ड किया। दक्षिण अफ्रीका के गेंदबाजों ने इसके बाद न्यूजीलैंड को बड़ा शॉट खेलने का मौका नहीं दिया लेकिन टीम ने दौड़ कर रन चुराते हुए 10 ओवर में 70 रन बना लिये।

15वें ओवर की दूसरी गेंद पर 100 रन पूरे किये

अगले ओवर में डि क्लर्क ने कप्तान सोफी डिवाइन (छह) को पगबाधा कर दक्षिण अफ्रीका को बड़ी सफलता दिलायी। अमेलिया केर के साथ क्रीज पर आयी ब्रुक हैलिडे ने 14वें ओवर में सुने लुस के खिलाफ लगातार दो चौके जड़ 48 गेंद के बाउंड्री के सूखे को खत्म किया। टीम ने 15वें ओवर की दूसरी गेंद पर 100 रन पूरे किये। हैलिडे के साथ केर ने भी डि क्लर्क के इस ओवर में खिलाफ चौके जड़े। न्यूजीलैंड ने पिछले दो ओवर में 25 रन बटोर कर अपनी रनगति को तेज किया।

खबर संक्षेप

पाकिस्तान के खिलाफ श्रृंखला से हटे हेड

एडीलेड। आस्ट्रेलिया के स्टार बल्लेबाज ट्रेविस हेड भारत के खिलाफ 22 नवंबर से शुरू हो रही पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला से पहले

परिवार के साथ समय बिताने के लिये पाकिस्तान के विरूद्ध सीमित ओवरों की घरेलू श्रृंखला नहीं खेलेंगे। हेड दूसरी बार पिता बनने वाले हैं। वह पाकिस्तान के खिलाफ अगले महीने तीन मैचों की वनडे श्रृंखला और टी20 श्रृंखला में भाग नहीं लेंगे। हेड भारत के खिलाफ 22 नवंबर से पर्थ में शुरू हो रही पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला से पहले ब्रेक लेंगे।

आरएसपीबी, आईओसी ने फाइनल में बनाई जगह

नई दिल्ली। रेलवे खेल संवर्धन बोर्ड और इंडियन आइल कारपोरेशन ने सीनियर महिला अंतर विभाग राष्ट्रीय हॉकी चैंपियनशिप के फाइनल में प्रवेश कर लिया। आरएसपीबी ने भारतीय खेल प्राधिकरण को पहले सेमीफाइनल में 4-0 से हराया। नेहा (20वां मिनट), सलीमा टेटे (34वां) , कप्तान नवनीत कौर (38वां) और लालरेम्सियामी (60वां) ने गोल दागे। दूसरे सेमीफाइनल में आईओसी ने केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड को 4-1 से हराया।

सिनर ने जीती सिक्स स्लैम चैंपियनशिप

रियाद। इटली के यानिक सिनेर ने कार्लोस अल्काराज को 6-7, 6-3, 6-3 से हराकर सिक्स किंग्स स्लैम

नुमाइशी टेनिस चैंपियनशिप जीती जबकि नोवाक जोकोविच ने तीसरे स्थान के मैच में रफेल नडाल को 6-2, 7-6 से हराया। नडाल अपने कॅरियर में आखिरी बार यह चैंपियनशिप खेल रहे थे। बाईस बार के ग्रैंडस्लैम चैंपियन नडाल अगले महीने डेविस कप में स्पेन के लिए खेलने के बाद टेनिस को अलविदा कहेंगे।

शमी फिट, शुरू किया गेंदबाजी अभ्यास

एजेंसी ▶▶| बेंगलुरु

भारत के अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने रविवार को बिना किसी परेशानी के नेट पर करीब एक घंटे तक गेंदबाजी की। शमी साल की शुरुआत में हुई टखने की सर्जरी से उबर रहे हैं। शमी ने यहां न्यूजीलैंड के खिलाफ भारत के पहले टेस्ट के बाद नेट सत्र में गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्कल की निगरानी में गेंदबाजी की।

इस 34 वर्षीय खिलाड़ी ने देश के लिए अपना पिछला मुकाबला 2023 में एकदिवसीय विश्व कप के फाइनल में खेला था।शमी ने अभ्यास के दौरान भारत के सहायक कोच अभिषेक नायर को गेंदबाजी की। शमी के बाएं पैर में पट्टी बंधी थी। उन्होंने छोटे रनअप के साथ गेंदबाजी शुरू करने के बाद पूरे रनअप और अच्छी गति के साथ गेंदबाजी की। इस दौरान उन्होंने नायर को अपनी स्विंग गेंदों से परेशान भी किया। उन्होंने इस दौरान क्षेत्ररक्षण अभ्यास करने के बाद गेंदबाजी कोच मोर्ने मोर्केल से बातचीत भी की।

रणजी ट्रॉफी: मुंबई जीत से 61 रन दूर

मुंबई। महाराष्ट्र के कप्तान रुतुराज गायकवाड़ और मध्यक्रम बल्लेबाज अंकित बावने के शानदार शतकों के बावजूद गत चैंपियन मुंबई रविवार को यहां रणजी ट्रॉफी ग्रुप ए मैच के तीसरे दिन जीत के करीब पहुंच गया। महाराष्ट्र ने अपनी दूसरी पारी में 388 रन बनाए। इस तरह से मुंबई को जीत के लिए 74 रन का लक्ष्य मिला। उसने तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक अपनी दूसरी पारी में बिना किसी नुकसान के 13 रन बनाए और इस तरह से वह लक्ष्य से अब केवल 61 रन दूर है।

सुंदर भारतीय टेस्ट टीम में शामिल

एजेंसी ▶▶| बेंगलुरु

हरफनमौला वाशिंगटन सुंदर को रविवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ शेष दो टेस्ट मैचों के लिए भारतीय टीम में शामिल किया गया। न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की श्रृंखला के पहले मैच में आठ विकेट की हार के बाद चयनकर्ताओं ने वाशिंगटन को टीम में शामिल कर लिया। इस 25 वर्षीय खिलाड़ी को दिल्ली के खिलाफ चल रहे रणजी ट्रॉफी मैच में तमिलनाडु के लिए 152 रन बनाने के बाद टीम में शामिल किया गया है। वाशिंगटन ने जनवरी 2021 में गाबा में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत की ऐतिहासिक जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने अपने पदार्पण टेस्ट में गेंद और बल्ले से प्रभावित किया था। न्यूजीलैंड श्रृंखला के बाद भारत के ऑस्ट्रेलिया दौरे को देखते हुए वाशिंगटन को एक बार फिर से टीम में शामिल किया गया है। बीसीसीआई ने यहां जारी बयान में कहा, 'वाशिंगटन सुंदर दूसरे टेस्ट से पहले पुणे में टीम के साथ जुड़ेंगे।'

जीते 11 पदक

एशियाई क्रॉस कंट्री में भारतीय खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन

एजेंसी ▶▶| हांगकांग

भारतीय खिलाड़ियों ने रविवार को यहां एशियाई क्रॉस कंट्री चैंपियनशिप में प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए 11 पदक जीते। भारत ने सभी चार टीम श्रेणियों पुरुष, महिला और पुरुष अंडर-20 और महिला अंडर-20 में स्वर्ण पदक जीते।

भारत ने जहां पुरुषों की व्यक्तिगत 10 किमी स्पर्धा में क्लीन स्वीप किया वहीं भारतीय महिला एथलीटों ने व्यक्तिगत 10 किमी दौड़ में स्वर्ण और रजत पदक जीता, लेकिन वह कांस्य पदक से चूक गईं। एशियाई खेलों के पदक विजेता और 5,000 मीटर और 10,000 मीटर ट्रैक स्पर्धाओं में राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारक गुलवीर सिंह पुरुषों की 10 किमी दौड़ में शीर्ष पर रहे। उन्होंने 32:43 मिनट में यह दौड़ पूरी करके स्वर्ण पदक हासिल किया। अभिषेक पाल 32:49 मिनट के समय के साथ दूसरे जबकि अरुण राठौड़ 32:51 मिनट के साथ तीसरे स्थान पर रहे। भारत के ही कार्तिक कुमार ने चौथा स्थान हासिल किया। महिलाओं की 10 किमी दौड़ में सीमा ने 37:20 मिनट का समय लेकर हमवतन संजीवनी जाधव को पीछे छोड़कर स्वर्ण पदक जीता। संजीवनी ने भी 37:20 मिनट का समय निकाला लेकिन फोटो फिनिश में वह पीछे रह गई और उन्हें रजत पदक से संतोष करना पड़ा।

भारत ने पाकिस्तान को सात रन से हराया

एजेंसी ▶▶| अल अमीरात

- इमर्जिंग एशिया कप टी20

भारत ए क्रिकेट टीम ने सभी विभागों में अच्छा प्रदर्शन करते हुए एसीसी इमर्जिंग एशिया कप टी-20 में चिर-प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान को सात रन से हराकर अपने अभियान की शुरुआत की।

शीर्ष क्रम के शानदार प्रदर्शन से भारत ए ने आठ विकेट गंवाकर 183 रन बनाए। तिलक वर्मा ने 35 गेंदों पर 44 रन की पारी खेली। प्लेयर ऑफ द मैच तेज गेंदबाज अंशुल कांबोज (3/33), रसिख डार सलाम (2/30) और निशांत सिद्धू (2/15) के आगे पाकिस्तान ए टीम सात विकेट पर 176 रन ही बना पाई। इस जीत की बदौलत भारतीय टीम ग्रुप बी में दो अंक और +0.350 के नेट रन रेट के साथ दूसरे स्थान पर पहुंच गई है। यूएई फिलहाल इस ग्रुप में शीर्ष पर है। उसके दो अंक और +0.378 नेट रन रेट है। इस ग्रुप की चौथी टीम ओमान है।

अभिषेक और प्रभसिमरन ने जोड़े 68 रन

भारतीय कप्तान तिलक वर्मा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। अभिषेक शर्मा और प्रभसिमरन सिंह ने पहले विकेट के लिए 68 रन की साझेदारी निभाई। अभिषेक 22 गेंद में पांच चौके और दो छक्के की मदद से 35 रन बनाकर आउट हुए। वहीं, प्रभसिमरन ने 19 गेंद में तीन चौके और तीन छक्के की मदद से 36 रन की ताबड़तोड़ पारी खेली। कप्तान तिलक ने 35 गेंद में दो चौके और दो छक्कों की मदद से 44 रन बनाए। नेहल वढेरा ने 22 गेंद में दो चौके और एक छक्के की मदद से 25 रन बनाए।

फुगे विश्व कप फाइनल में पदक से चूके, ज्योति क्वार्टर से बाहर

एजेंसी ▶▶| टिलेक्सकला

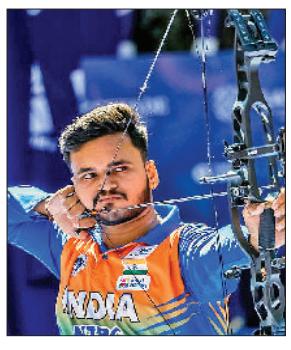

उदीयमान सितारे प्रथमेश फुगे तीरंदाजी विश्व कप कंपाउंड सेमीफाइनल में तनावपूर्ण शूटआफ में मौजूदा चैंपियन मथियास फुलेर्टन से हारकर पदक से चूक गए। रोमांचक मुकाबले में दोनों तीरंदाजों ने पांचों दौर में परफेक्ट 10 स्कोर किया और एक अंक भी नहीं गंवाया। स्कोर 150-150 रहने के बाद शूटआफ से विजेता का फैसला हुआ।

शूटआफ में भी स्कोर 10-10 से बराबर रहा। इसके बाद डेनमार्क के तीरंदाज ने मामूली अंतर से फुगे को हराया। कांस्य पदक के प्लेआफ मुकाबले में वह विश्व चैंपियन माइक शोलेसेर से 150-146 से हार गए। वहीं पूर्व विश्व कप पदक विजेता ज्योति सुरेखा वेन्नम महिला कंपाउंड वर्ग में क्वार्टर फाइनल में एस्तोनिया की मीरी मारिता पास से 145-147 से हार गई। रिकर्व वर्ग में दीपिका कुमारी और धीरज बोम्मादेवरा उतरेंगे।

जर्मनी के खिलाफ 23 और 24 अक्टूबर को खेले जाएंगे दो मैच

वरुण की भारतीय हॉकी टेस्ट टीम में वापसी

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

जर्मनी के खिलाफ 23 और 24 अक्टूबर को यहां मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम पर होने वाले दो टेस्ट मैचों के लिए डिफेंडर वरुण कुमार की भारतीय हॉकी टीम में वापसी हुई है। एक जूनियर वॉलीबॉल खिलाड़ी द्वारा यौन उत्पीड़न के आरोप लगाये जाने के कारण वरुण पेरिस ओलंपिक और एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी टीम में जगह नहीं बना सके थे।

हॉकी इंडिया सूत्रों ने बताया कि सभी आरोपों से क्लीन चिट मिलने के बाद वरुण को टीम में शामिल किया गया है। हरमनप्रीत सिंह की कप्तानी वाली भारतीय टीम को मिडफील्डर हार्दिक सिंह की कमी खलेगी जो ओलंपिक में लगी चोट से उबर नहीं सके हैं। इस श्रृंखला के जरिए राजिंदर सिंह और आदित्य अर्जुन लालागे पदार्पण करेंगे।

गोलकीपर कृशन बहादुर पाठक और सूरज करकेरा होंगे। टीम के बारे में कोच क्रेग फुल्टोन ने कहा, 'हम जर्मनी से खेलने को लेकर काफी उत्साहित हैं। हमने अनुभवी टीम चुनी है और इसमें कई खिलाड़ी वहीं हैं जिन्होंने पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीता है। राजिंदर और आदित्य अंतरराष्ट्रीय हॉकी में पदार्पण करेंगे जिन्होंने शिविर में काफी अच्छा प्रदर्शन किया है।'

भारतीय टीम

गोलकीपर : कृशन बहादुर पाठक और सूरज करकेरा।
डिफेंडर : हरमनप्रीत सिंह, जरमनप्रीत सिंह , अमित रोहिदास, वरूण कुमार, सुमित, नीलम संजीप सेस और संजय
मिडफील्डर : मनप्रीत सिंह, विवेक सागर प्रसाद, विष्णु कांत सिंह, नीलाकांता शर्मा, शमशेर सिंह, मोहम्मद राहीन मौसीन और राजिंदर सिंह
फॉरवर्ड : मनप्रीत सिंह , सुखजीत सिंह, अभिषेक, आदित्य अर्जुन लालागे, दिलप्रीत सिंह और शीलानंद लाकड़ा।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक संपादक उपेन्द्रसिंह राठौड़, अम्बर ऑफसेट प्रा.लिडीएल टॉवर, उए, विद्याश्रम संस्थानिक क्षेत्र जेएलएन मार्ग जयपुर से मुद्रित एवं भू-तल ऑरबिट मॉल, सिविल लाइंस, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित, 99280-96524, पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार, (सहसंपादक) 8696750000, पंकज गर्ग (प्रबंध संपादक) 01482-455184, 9214417111